श्री

कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

❖ मारफत सागर ❖

ढूंढ़े सबे मेयराज को, सबे मेयराज में सब ।
सो सबे मेयराज[1] जाहेर करी, सो सब मेयराज देखसी अब ।।

मसौदा

(ए किताब मारफत सागर जो हकताला के हुकम से पैदा हुई, हादी के दिल पर आप बैठ के बिगैर हिजाब[2] बारीक बातें "चौपाई" मुंह से केहेलवाई । सो कलाम ज्यों आवते गए, सो यारों ने लिखे और फिर हादी प्यार से सुनते गए । सो सुन सुन के, हुकम से हाल अपने पर, अर्स बका लाहूती का लेते गए और जामा[3] नाजुक होता गया । सो इहाँ तांई के, आखिर इस आलम नासूत सेती कूच करके, अपने रूहानी आलम बका वतन हमेसगी, असली मिलाप के आराम पकड्या और ए "चौपाई" जो नाजिल होती गई थी सो मसौदे ज्यों ही के त्यों ही रहे । सो अब हक हादी के हुकम से मोमिनों ने इस के बाब[4] बांधे हैं, माफक अकल अपनी के पर ए जो "चौपाई"

१. वह रात जिसमें महंमद साहिब को दीदार हुआ । २. परदा । ३. शरीर । ४. प्रकरण - अध्याय ।

हादी ने फुरमाई थीं, तिन में एक हरफ ज्यादा या कम नहीं किए, अब मोमिन इन "चौपाईयों" के हरफ-हरफ के माएने मगज, जाहेर के और बातून के लेय के हक के हुकम से हादी के कदमों कदम धरेंगे । किस वास्ते के मोमिन हादी के अंग नूर हैं और नूर बिलंद से उतरे हैं, तो चढ़ना इनों को जरूर है और अर्स बका के पट हादी ने, इलम लदुन्नी से खोल दिए हैं और आप हक के नाजी फिरके को हिदायत करके, निसबत मोमिन असलू तन, जो बीच अर्स के हक हादी के कदम तले बैठे हैं । सो देखाए दई है रूह की नजर से । जिनसों हक ताला ने बका खिलवत बीच, कौल अलस्तो बे रब्ब कुम का किया, तब कालू बला भी रूह मोमिनों ने कह्या है और कलाम अल्ला और हदीसों, और कैयों किताबों के बातूनी मगज माएने । हादी ने वारस मोमिनों को, रूह की नजर खोल के, दिल हकीकी पर साहेदियों सेती[1] नकस[2] किया है और दिल अर्स कह्या है और दुनियां मुरदार भी नजीक मोमिनों के हैं । तिस वास्ते जो हादी तुमको बुलावने आए थे । सो पट बका का खोल के आगे से केतेक यारों को लेके पधारे हैं । तो मोमिनों को जरूर कदमों कदम धरना है । हुकम हक हादी के सेती।)

१. द्वारा । २. चित्रित करना ।

खिलवतकी रद बदलें

पेहेले कहूं अव्वल की, हक हादी हुकम ।
मोमिन दिल अर्समें, हकें धरे कदम ।।१।।

जो कह्या आयतों हदीसों, और किताबों बोल ।
जिन पर मोहोर महंमद की, सो कहूं फुरमाए कौल ।।२।।

एक दूजी को मनसूख, करे आयत आयत को ।
तिस वास्ते लेऊं चुन चुन, जो सिरे रखी सब मों ।।३।।

सो सुध पाइए लदुन्नी से, देखे ना उपली नजर ।
जो सिफली[१] के दिल मजाजी, बिन इलम देखे क्योंकर ।।४।।

हुकमें कहूं ता दिन की, जो हक हादी रूहों खिलवत ।
अबलों जाहेर न काहूं, ए बका मता वाहेदत ।।५।।

जब नहीं कछू पैदा हुआ, जिमी या आसमान ।
और ना कछू चौदे तबक, फरिस्ते दुनी जहान ।।६।।

ना तब चारों चीज को, किनहूं समारे ।
ना कछू चाँद तब सूरज, ना पैदा सितारे ।।७।।

ना कोई कहे बेचून को, नाहीं बेचगून ।
ना केहेने वाला बेसबी का, नाहीं बेनिमून ।।८।।

ना खाली तब हवा सुन्य, नाहीं ला मकान ।
ना कछू किया तब हुकम, ए जो कह्या कुंन[२] सुभान ।।९।।

एक बका नूर-मकान, आगूं नूरतजल्ला ।
रह्या जबराईल हद नूर की, आगूं पोहोंचे रसूल अल्ला ॥१०॥

जबरूत लाहूत दोऊ बका, हादी रूहें लेवें लज्जत ।
ए पातसाही हक की, बीच नूर वाहेदत ॥११॥

१. नीच, अधम । २. हो जा ।

जब न्यामत पाई हक की, खुली मुसाफ[1] हकीकत ।
तब सब विध पाइए, हक अर्स मारफत ॥१२॥

जिन को हक मेहेर सों, आप करें हिदायत ।
सो सबे विध बूझहीं, अर्स बका निसबत ॥१३॥

अर्स दिल एही हकीकी, अर्स रूहें मोमिन ।
रहें दरगाह बीच असल, सूरत अर्स तन ॥१४॥

खासलखास रूहें कहीं, ए अहमद उमत ।
भाई कहे महंमद के, हक खासी खिलवत ॥१५॥

देखो बड़ाई महंमद, मासूक केहेवें हक ।
इन के सरभर दूसरा, कोई नहीं बुजरक ॥१६॥

दो हिजाब[2] जर[3] मोती के, बीच राह साल सत्तर ।
हक महंमद दोऊ हिजाब में, आखिर बातें करी इन बेर ॥१७॥

ए लिख्या सिपारे आममें, करी बातें हक महंमद ।
सो मोमिन आयत देख के, सक सुभे करें रद ॥१८॥

हक महंमद के बीच में, कहे आड़े परदे दोए ।
सत्तर साल बीच राह कही, जाहेरी माएने निसां क्यों होए ॥१९॥

जो लों मुसाफ हकीकत, खोले नहीं वारस ।
कोई पावे ना बिना लदुन्नी, हक महंमद रूहें अर्स ॥२०॥

ए हादी हमेसगी, अर्स बका हक जात ।
नूर रूहें वाहेदत, इत और न कछूए समात ॥२१॥

हुई मजकूर[4] अर्समें, सो सब वास्ते इस्क ।
अर्स हक हादी रूहें, ए साहेबी बुजरक ॥२२॥

खिलवत हक हादीय की, जो इस्क रूहों असल ।
ए बातून बारीक वाहेदत की, इत पोहोंचे ना फना अकल ॥२३॥

१. कुरान । २. परदा । ३. जरी । ४. बातें ।

रूहों कह्या हक हादीय सों, हम तुमारे आसिक ।
तुम हमारे मासूक, इनमें नाहीं सक ॥२४॥

तब कह्या बड़ी रूह ने, इस्क मेरा ताम[1] ।
हक रूहों की मैं आसिक, मेरा याही में आराम ॥२५॥

तब हकें कह्या हादी रूहों को, तुम मासूक मेरे दिल ।
इत इस्क मेरा पाए ना सको, जो सहूर करो सब मिल ॥२६॥

नूर-मकान नूर हक का, जित हैं नूर-जलाल ।
तिन दिल हकें यों चाह्या, देखें इस्क नूर-जमाल ॥२७॥

कैसा इस्क बड़ीरूहसों, कैसा इस्क रूहों साथ ।
इस्क हादी का हक से, कैसा हकसों इस्क जमात ॥२८॥

ए इस्क रमूज रहे हमेसा, हक हादी रूहन ।
ए बेवरा क्योंए न होवहीं, बीच वाहेदत इस्क पूरन ॥२९॥

तब हकें दिलमें यों लिया, मैं देखाऊं अपना इस्क ।
और पातसाही अपनी, ए देखें रूहें मुतलक ॥३०॥

बका अर्स में जुदागी, सो तो कबूं न होए ।
ए बेवरा नहीं वाहेदत में, होए कम ज्यादा बीच दोए ॥३१॥

ए मजकूर अव्वल का, हँसते करें सब कोए ।
पर कम ज्यादा वाहेदत[2] में, बेवरा क्योंए न होए ॥३२॥

हक आसिक हादीय का, और आसिक रूहन ।
ऐसा हक का सुकन, क्यों सहें बन्दे मोमिन ॥३३॥

चाहिए मोमिन आसिक हक के, और आसिक हादी के ।
रूहें हादी आसिक हक की, सीधा इस्क बेवरा ए ॥३४॥

वाहेदत कहिए इनको, एक इस्क तन मन ।
जुदागी जरा नहीं, वाहेदत में पाव खिन ॥३५॥

१. खुराक । २. एक दिली, एकरस ।

मैं छिपाऊं तुम को, बैठो पकड़ कदम ।
तुम इस्कै से पाओगे, आए मिलो मांहें दम ॥३६॥
उतर जब तुम देखोगे, लैलत कदर के मांहें ।
और जिमी औरै आसमान, देखो प्रतिबिम्ब तांहें ॥३७॥
फरामोसी क्यों होएसी, क्या जुदे होसी मांहें खेल ।
तुमको क्यों हम भूलेंगें, ए कैसी है कदर लैल ॥३८॥
कह्या हकें रूहन को, तुम उतरो मांहें लैल ।
बैठो पकड़ कदम, देखोगे मांहें खेल ॥३९॥
देखो और जिमीय को, औरे आसमान ।
सो सब फना बीच में, दुनियां सकल जहान ॥४०॥
तित कानों सुने जाएँगे, ए जो चौदे तबक ।
कोई हमारे अर्स की, तरफ न पावे हक ॥४१॥
देखो जिमी दमी आदमी, खलक तमासा ।
ए खाली बीच बसत हैं, मुरदों का वासा ॥४२॥
ए ना कछू पेहेले हुते, ना होसी आखिर ।
खेल ऐसा देखो बीच, मांहें लैलत कदर ॥४३॥
रूहें देखें झूठ फरेब[1] को, कई भांत तमासा ।
लाख विधों कई खोजहीं, कोई पावे ना खुलासा ॥४४॥
ए जो दुनी देखो खेलती, आवे जाए हुकम ।
झूठा वजूद ना रेहेवहीं, चले कर गिनती दम ॥४५॥
आवे जाए मांहें खेलहीं, अपने बल उमर ।
ढूंढ्या फेर न पाइए, ए मुआ क्यों कर ॥४६॥
कोई आप न चीन्हहीं, ना चीन्हे हक वतन ।
ना चीन्हे तिन जिमीय को, ऊपर खड़ा है जिन ॥४७॥

१. छल ।

कहे हक तुम भूलोगे, उन जिमी में जाए ।
रहोगे बीच नासूत के, उतहीं उरझाए ॥४८॥

चलना जेता रात का, अमल जो सरीयत ।
दिन मारफत हुए बिना, कछुए ना सूझत ॥४९॥

बिना इस्क सूझे नहीं, ए जो रात का अमल ।
ए राह चलसी लग फजर, तोरे[1] के बल ॥५०॥

बातून जब तुम देखागे, खोलसी रूह नजर ।
लैलत कदर के तकरार, तीसरे होसी फजर ॥५१॥

लिखों हकीकत खिलवत की, आखिर होसी जो सब ।
कहां से लिख भेज्या कौन खसमें, कहोगे आए हम कब ॥५२॥

ए इस्क तो पाइए, जो पेहेले मोकों जाओ भूल ।
तुम ले बैठो जुदागी, मैं भेजों तुम पर रसूल ॥५३॥

रसूल आवेगा तुम पर, ले मेरा फुरमान ।
आए मेरे अर्स की, देसी सब पेहेचान ॥५४॥

तब दिल में राखियो, खबरदारी[2] तुम ।
इसारतें कई रमूजें, लिख भेजेंगे हम ॥५५॥

तुम पर भेजोंगा फुरमान, मासूक के हाथ ।
अर्स कुंजी नूर रोसन, भेजों रूह मेरी साथ ॥५६॥

द्वार सबे खोलसी, होसी नूर रोसन ।
देखोगे हक सूरत, और असलू तन ॥५७॥

तुम कहोगे कहां खसम, कैसा खेल कौन हम ।
देसी साहेदी रसूल रूहअल्ला, जो खिलवत करी हम तुम ॥५८॥

हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए-रोए ।
तुम भी सुन - सुन रोएसी, पर होस में न आवे कोए ॥५९॥

१. कर्मकांड का विधान (शराअ)। २. होंशियार, सावचेती ।

तुम कहोगे रसूल को, हम क्यों आए कहां वतन ।
मलकूत बिना कछू और है, आगे तो खाली हवा सुंन ॥६०॥

मैं भेजों रूह अपनी, इलम देसी समझाए ।
तब मूल कुल्ल अकल, असराफील ले आए ॥६१॥

आयतें हदीसें रसूल, और किताबें सब ।
खोलसी इसारतें रमूजें, होसी पेहेचान तब ॥६२॥

देखाए फरामोसी तारीकी, ऊपर देऊं मेरा इलम ।
जासों मुरदे होवें जीवते, सो दई हाथ हैयाती[1] तुम ॥६३॥

जो कछू आखिर होएसी, तुम देत हो आगूं बताए ।
सो क्यों हम भूल जाएँगे, जो लेत हैं दिल लगाए ॥६४॥

दूर तो कहूं न करोगे, बैठे कदम तले ।
फेरें तुमारा फुरमाया, हम ऐसी क्यों करें ॥६५॥

करें हुसियारी आपुस में, हम देखें खेल जुदागी ।
देखें हक डारें क्यों जुदागी, हम बैठे सब अंग लागी ॥६६॥

इन विध एक दूजी सों, करी सबों मसलहत[2] ।
आपन मोमिन सब एक तन, बीच कहां पैठे गफलत[3] ॥६७॥

मैं भूलों तो तूं मुझे, पल में दीजे बताए ।
तूं भूले तो मैं तुझे, देऊंगी तुरत जगाए ॥६८॥

हम देखेंगे हक इस्क, और पातसाही हक ।
सो ए आपन मिल देखसी, ऐसा सुख हक का मुतलक ॥६९॥

हम रूहों को देखाइए, बड़ा इस्क हक ।
और पातसाही हक की, ए जो बड़ी बुजरक ॥७०॥

हम कदम छोड़ के, कहूं जाए न सकें दूर ।
बैठे इत देखें सबे, बीच तजल्ला नूर ॥७१॥

१. अखंड, अमरत्व । २. सलाह । ३. भूल, अज्ञान ।

कहे हक देखो खेल लैल का, बैठे अर्स में इत ।
पीछे देखो सरत पर, सूरज मारफत ॥७२॥

राह रसूल बतावहीं, मेरे अर्स चढ़ उतर ।
तब तुम महंमद के, कदम लीजो दिल धर ॥७३॥

रात अमल तब मेट के, करसी इलम फजर ।
देखोगे दिन मारफत, खोल देसी रूह नजर ॥७४॥

रद बदल आपुस में, कर बैठे मजकूर[1] ।
कौल किया बीच खिलवत, हकें अपने हजूर ॥७५॥

हकें करी रूहें साहेद[2], और फरिस्ते साहेद ।
आप भी बीच साहेद, कौल किया वाहिद[3] ॥७६॥

इस्क का अर्स अजीममें, रब्द हुआ बिलंद[4] ।
तो बेवरा देखाया इस्क का, मांहें फरेबी फंद ॥७७॥

आप बैठे दिल देय के, ऊपर बारे हजार ।
होसी हाँसी सब मेयराज में, जिन को नहीं सुमार ॥७८॥

महामत कहे ए मोमिनों, याद करो खिलवत सुकन ।
जो किया कौल अलस्तो-बे-रब, मिल हक हादी रूहन ॥७९॥

॥प्रकरण॥१॥चौपाई॥७९॥

इलम लदुन्नी नुकता तारतम

तिस वास्ते दुनी पैदा करी, दई दूर जुदागी जोर ।
हमें नजीक लिए सेहेरग से, यों इलमें देखाया मरोर ॥१॥

अर्स बका बीच ब्रह्मांड के, सुध चौदे तबकों नाहें ।
सो हम को नजीक सेहेरग से, पट खोल लिए बका मांहें ॥२॥

जाहेरियों नजर जाहेर, धरी ऊपर सात आसमान ।
हक छोड़ नजीक सेहेरग से, पूजी हवा तारीक मकान ॥३॥

१. चर्चा । २. साक्षी । ३. एक (धनी) । ४. बड़ा ।

रूहें अर्स से उतरीं, बीच लैलत कदर ।
तिनमें रूहअल्लाह की, भेजी सिरदार कर ।।४।।

ल्याए इलम लदुन्नी, खोली हक हकीकत ।
खोले पट सब अर्सों के, हक दिन मारफत ।।५।।

उतरे खेल देखन को, रूहें जिन के इजन ।
सो ढूंढें हक सहूर से, अर्स रूहें मोमिन ।।६।।

लेवें सब साहेदियां, हदीसे महंमद ।
और आयतें कुरान की, सूरतें मगज सब्द ।।७।।

लिखे आयतों हदीसों, हक के सुकन ।
समझेगी सोई रूह, जाके असल अर्स में तन ।।८।।

इसारतें और रमूजें, लिखे कई किस्से निसान ।
सो ए पाओ तुम हदीसों, और आयतों कुरान ।।९।।

करें किताबें जाहेर, और खुलासे पुकार ।
बिन मोमिन बिन लदुन्नी, करे सो कौन विचार ।।१०।।

ए और कोई बूझे नहीं, बिना अर्स के तन ।
जो नूर बिलंद से उतरीं, दरगाही रूहें मोमिन ।।११।।

नूर कुंजी आए पीछे, ईसे का अमल ।
साल सत्तर ढाँप्या रह्या, आगूं चल्या महंमदी मिल ।।१२।।

आए हुआ इत रोसन, ऊपर अपनी सरत ।
अव्वल आखिरी इलमें, जाहेर करी कयामत ।।१३।।

एही बका अर्स की, हक करें हिदायत ।
खोली खिलवत गैब की, हक की वाहेदत ।।१४।।

लिख्या सिपारे आठमें, मोमिनों की हकीकत ।
हुई ढील फजर वास्ते, करी जाहेर गैब खिलवत ।।१५।।

खोल बका अर्स मोहोलात, और बाग हौज जोए ।
मोमिन देखें जिमी जंगल, पसु पंखी सोए ॥१६॥

सूरत आतेना-कलकौसर[1], लिखी आम सिपारे ।
सो आए देखो तुम महंमदी, खोले नूर पार द्वारे ॥१७॥

कह्या होसी जाहेर, अर्स रूहें मोमिन ।
उतरे नूर बिलंद से, करें सब अर्स रोसन ॥१८॥

जो कह्या महंमदें, लैल मेयराज माहीं ।
सोई कौल रूहअल्ला ने, कहे रूहों के तांईं ॥१९॥

जब इन दोऊ मरदों ने, मिल साहेदी दई ।
तब मेरे दिल अर्स में, जरा सक ना रही ॥२०॥

तो इन रूहों मोमिनों, दिल अर्स केहेलाया ।
जो हक इलम लदुन्नी, मेरे दिल आगूं ही आया ॥२१॥

तब कह्या हुई फजर, ऊग्या हक बका दिन ।
तब सूरज मारफत के, करी गिरो रोसन ॥२२॥

कौल कहे सो सब हुए, और भी कह्या होत ।
रूहअल्ला ल्याए इलम, भरे जिमी आसमान जोत ॥२३॥

रूहअल्ला अर्स अजीम से, नूर आला[2] ले आए ।
सो ए नूर कोई क्यों कर, सकेगा छिपाए ॥२४॥

हवा अंधेरी बीच रात के, ऊग्या मारफत सूर ।
भरे जिमी और आसमान, दुनियां पूर नूर ॥२५॥

ऐसी करी बीच आलम, रूहअल्ला के इलम ।
मार्‌या कुली दज्जाल को, जो करता था जुलम ॥२६॥

फुरमाया सो सब हुआ, जो कछू कह्या महंमद ।
तो जो किया रूहअल्लाने, दज्जाल को रद ॥२७॥

१. सूर कौसर - इन्ना अअ्तैना - कल् कौसर (१०८/१) हमने तुम को कौसर अता फरमाई है । २. सर्वश्रेष्ठ (तारतम) ।

कुरान माजजा नबी नबुवत[१], साबित होए हुए एक दीन ।
ईसा करसी हक इलमें, आवसी सबों आकीन ॥२८॥

फुरमाया सो सब हुआ, ऊपर अपनी सरत ।
कौल रसूल के फिरवले, आई ए आखिरत ॥२९॥

कौल किए हक हादीने, मांहें खिलवत रूहन ।
सो दिल महंमद मोमिनों, हुआ पूर रोसन ॥३०॥

एक गिरो रूहें अर्स से, हुकमें आई जो इत ।
जिन ऊपर रसूल, ल्याए किताबत ॥३१॥

तिन रूहों के बीच में, रूह अल्ला सिरदार ।
सो ए लिखी मांहें हदीसों, जो कही परवरदिगार ॥३२॥

सो ए करी जाहेर, रसूलें इत आए ।
सोई रूहअल्ला सुकन, ल्याए मोमिनों बताए ॥३३॥

सो तो आया हक का, लदुन्नी इलम ।
लिख्या दिल अर्स पर, मोमिनों बिना कलम ॥३४॥

सो ए लिख्या कुरान में, बाईसमें सिपारे ।
लिखियां आयतां जंजीरां[२], बयान न्यारे न्यारे ॥३५॥

जो देखेगा दिल दे, आयतां जंजीरां मिलाए ।
माएने मगज मुसाफ के, होसी नूर रोसन ताए ॥३६॥

ऐसा अब लग कबहूं, हुआ नहीं रोसन ।
सो हक हादी जानत, या जानें रूहें मोमिन ॥३७॥

जब हक का इलम, हुआ जाहेर ए ।
तिन इलमें कायम करी, दुनी फानी हुती जे ॥३८॥

ए सुकन बातून जिन को, दिल बीच सोहाए ।
सो सुनके तबहीं, एक दीन में आए ॥३९॥

१. पैगम्बरी । २. कड़ियां (वाक्यों के अलग - अलग शब्दों में) ।

बका अर्स हक सूरत, हुआ नूर रोसन ।
सो ए सरत जाहेर हुआ, फरदा रोज का दिन ॥४०॥

जो कलाम अल्लाह में, फुरमाई फजर ।
सो खुली हक इलमें, रूह बातून नजर ॥४१॥

हुआ खासलखास जो, रूह मोमिनों मेला ।
बहत्तर से जुदा कह्या, नाजी फिरका अकेला ॥४२॥

जिन को लिखी आयतों हदीसों, हिदायत हक ।
हकें इलम अपना, तिन को दिया बेसक ॥४३॥

सोई मोमिन अर्स के, उतरे नूर बिलंद ।
ताको टाली हक इलमें, झूठ फरेबी फंद ॥४४॥

हुई मोमिनों को पूरन, तौहीद की मदत ।
सो लेवें दुनियां मिने, हक अर्स लज्जत ॥४५॥

नाहीं मोमिनों कबहूं, दुनियां का दिमाक ।
जाको हक इलमें, किए सबों को पाक ॥४६॥

ए जो मोमिन हकीकी, सो कहे अर्स दिल ।
सो तो पाक हमेसगी, रूहें अर्स निरमल ॥४७॥

सिपारे सत्ताईस में, लिख्या नीके कर ।
सो लीजो तुम मोमिनों, बीच अर्स दिल धर ॥४८॥

अर्स में सूरत मोमिनों, जो कही हैं असल ।
तिन पाया बीच नासूत के, बका हाहूती[1] फल ॥४९॥

और गिरो फरिस्तन की, मुतकी[2] परहेजगार ।
ए भी आए लैलत कदर में, तीनों तकरार ॥५०॥

आम खलक जो तीसरी, पैदा जो जुलमात ।
सो अटके वजूद में, पकड़े पुल-सरात ॥५१॥

१. रंग महल (परम धाम) का अखंड आनंद । २. ईश्वरी सृष्ट ।

रूहें दिल हकीकी, कहे अर्समें तन ।
अर्स जिनों के दिल कहे, सोई रूहें मोमिन ॥५२॥
लिखी इनों की बुजरकी, मुसाफ मांहें सिफत ।
बीच महंमद की हदीसों, लिखी बड़ी इज्जत ॥५३॥
महामत कहे ए मोमिनों, तुमें करी हिदायत हक ।
और कहूं फिरके पैगंमरों, जो चलाए हुए बुजरक ॥५४॥
॥प्रकरण॥२॥चौपाई॥१३३॥

बाब फिरकों का

फिरके नारी तो कहे, ए जो बीच कुरान ।
बहत्तर बांटे होए के, सबे हुए हैरान ॥१॥
सिपारे चौबीसमें मिने, लिखी सूरत अबलीस ।
जल थल सबों में ए कह्या, या को पूजें कर जगदीस ॥२॥
कह्या दरिया जंगल से, नेहेरें चलें दज्जाल ।
सो नेहेरें जंगल से क्यों चलें, ए फिरके चले इन हाल ॥३॥
ए जो कहे बनी-आदम, सब पूजत डाली हवा ।
कह्या निकाह अबलीस से, दुनियां जो दाभा[१] ॥४॥
कह्या गधा जो दज्जाल का, ऊंचा लग आसमान ।
एही हवा तारीकी[२] सिर सबों, जासों पैदा ए जहान ॥५॥
तो दुनियां तांबें दज्जाल के, पातसाह सैतान दिलों पर ।
दुनी सिफली[३] अबलीस बिना, एक दम न सके भर ॥६॥
राह अंधेरी रात की, सब की चली सरीयत ।
बैठा दिल पर दुस्मन, लेने न दे हकीकत ॥७॥
ए जो बीच दुनी के, जाहेर परस्त[४] जेता ।
तिन फिरकों सबों का, खुलासा एता ॥८॥

१. पशुवृत्ति वाले मानव । २. मोह तत्व । ३. घटिया । ४. पूजने वाला ।

जो हुए पैगंमर रात के, सुरिया न उलंघी किन ।
जो जेते लग पोहोंचिया, सोई पैगाम दिए तिन ॥९॥

पैगंमर या और कोई, जो हुए रात में बुजरक ।
किन नूर पार पोहोंच के, ले खबर न दई बका हक ॥१०॥

तरफ न कही किन ने, तो पट खोले क्यों कर ।
ए हुए जो बड़े रात के, तिन सबकी एह खबर ॥११॥

मनसूख[१] कही जो किताबें, रात में आईं जे ।
इन उमतें सब रानी[२] कही, जिनों मांगे माजजे रात के ॥१२॥

एक करी किताबें मनसूख, वाही नाम की करी हक ।
तिन उमतें सब रानी गई, अब कहो क्यों भागे सक ॥१३॥

करी अगली किताबें मनसूख, आखिर सोई पैगंमर ल्याए ।
नफा पाया तासों खलकों, आखिर चारों किताब पढ़ाए ॥१४॥

देखो मनसूख कही किन माएनों, क्यों मोहोर करी कही हक ।
सो लिख्या कौल तौरेत में, जासों नफा लेसी खलक ॥१५॥

अब कौन मनसूख को हक, ए दुनी सिफली[३] क्यों समझाए ।
एक हरफ बिना लदुन्नी, बिन वारस न बूझा जाए ॥१६॥

याही नाम की किताबें, याही नामें ल्याए पैगंमर ।
ए जो कही बड़ाई इनों की, सो सब बीच आखिर ॥१७॥

जब पट खोल्या महंमदें, सो नूर बूंदें लई जिन ।
तिन दिए पैगाम हक के, सबमें किया बका दिन ॥१८॥

जाकी बड़ाई लिखी कुरान में, किताबों और पैगंमर ।
जापर मोहोर महंमद की, सो सबों देसी फल फजर ॥१९॥

कई बड़े कहे पैगंमर, पर एक महंमद पर खतम ।
कई फिरके हर पैगंमरों, गिरो सब कहे नाजी हम ॥२०॥

१. पुरानी किताबें । २. रद्द (बहिष्कृत) । ३. तुच्छ जीव ।

सबों एक हादी हिदायत, सबों गिरो में नाजी[1] एक ।
ए कौन जाने बिना अर्स दिल, ए नबी नाजी दोऊ नेक ॥२१॥

नेक सुनो तुम मोमिनों, बीच लिख्या तफसीर ।
सो देखो चौथे सिपारे, दिल पाक करो सरीर ॥२२॥

रसूलें कह्या जालूत को, तुम में पीछे मूसा के ।
कहो फिरके केते हुए, मोहे देओ खबर ए ॥२३॥

तब कह्या जालूत ने, देखों मैं किताब ।
सो ए देख के कहोंगा, करो जिन सिताब ॥२४॥

तब कह्या रसूलें किताब, जले या चोरी जाए ।
तब क्यों करो इमामत[2], देखो दिल सों ल्याए ॥२५॥

ईसा के पीछे फिरके, पूछा रसूलें जानिक को ।
कहे फिरके पैंतालीस, जानिके रसूल सों ॥२६॥

तब फेर कह्या रसूल ने, ए सुध नहीं तुमें किन ।
ए नीके मैं जानत, माएने किताब इन ॥२७॥

पीछे मूसा के इकहत्तर, तामें फिरका नाजी एक ।
और सत्तर नारी[3] कहे, ए समझो विवेक ॥२८॥

बहत्तर ईसा के भए, नाजी एक तिन में ।
और नारी फिरके इकहत्तर, कह्या रसूलें जानिक से ॥२९॥

यों तिहत्तर मेरे होवहीं, नारी बहत्तर नाजी एक ।
ताको हिदायत हक की, जो हुआ नेकों में नेक ॥३०॥

मूसे ईसे रसूल के, सबों नारी कहे फिरके ।
कह्या एक नाजी तिनों में, खासलखास अर्स का जे ॥३१॥

गिनती फिरके केते कहूं, कई हुए बीच जहूदान[4] ।
कहे ताबे[5] दज्जाल के, जलसी जो कुफरान ॥३२॥

१. मोक्ष प्राप्त करने वाला (ब्रह्मसृष्टी) । २. नेतृत्व । ३. दोजखी, नारकी । ४. यहूदी । ५. आधीन ।

यों एक नाजी अव्वल से, पाया वाही ने फल आखिरत ।
वास्ते नूर नबीय के, देखाए करी कयामत ॥३३॥

लिख्या सिपारे अठारमें, कुरान माजजा नबी नबुवत ।
एक दीन जब होएसी, तब होसी साबित ॥३४॥

कहे रसूल कौल हक के, सबे करों एक दीन ।
सो ए कौल तोड़्या दुनी, जिनों रह्या ना आकीन ॥३५॥

माएना ऊपर का पोहोंचे नहीं, बीच अर्स बका ।
नजर बांध फना बीच, हुए जिद कर तफरका[1] ॥३६॥

हुई हिदायत हक की, एक नाजी को बातन ।
खोल नजर रूह की, देखाए अर्स तन ॥३७॥

कौल किए रूहों सों, उतरते हक ।
सो सिर लिए अपने, मजाजी खलक ॥३८॥

बुजरकी अर्स रूहों की, सिर अपने लेवें ।
सिफत एक नाजीय की, सो बहत्तरों को देवें ॥३९॥

जबराईल जित अटक्या, आगूं पोहोंच्या नाहें ।
सो ए जाने दुनियां हम, पोहोंचे तिन ठौर मांहें ॥४०॥

दुनियां जो तिलसम की, आगूं होने चाहे तिन ।
जो ल्याया रूहल-अमीन[2], कलाम अल्ला रोसन ॥४१॥

राह न देखे उपले माएनों, बीच अंधेरी रात ।
सो ए रहे बीच नासूत के, घेरे पुल-सरात ॥४२॥

ए देत देखाई दुनी फना, ए जो बीच नासूत ।
ऊपर फना सब फरिस्ते, ए जो कह्या मलकूत ॥४३॥

ए खाली जो तिन ऊपर, ला हवा जो सुंन ।
ए जुलमत तिन बीच में, चौदे तबक पलन[3] ॥४४॥

१. अलग, विरोध । २. श्रेष्ठ फरिस्ता जबराईल । ३. झूला ।

ए लिख्या दूसरे सिपारे, आयत कुरान के मांहें ।
सक सुभे होवे जिन को, सो देखे जाए तांहें ॥४५॥

ए छल महंमद गिरो को, हकें देखाया ।
सो ए खेल कुंन हुकमें, याही वास्ते बनाया ॥४६॥

ए छल फरेब तो कह्या, राह न सूझे रात ।
ए गुम हुए ढूंढ़ें फना बीच, आड़ी हुई जुलमात ॥४७॥

ढूंढ़्या चौदे तबकों, पर पाई न किन तरफ ।
बका का बीच दुनियां, कोई बोल्या न एक हरफ ॥४८॥

और सुरिया जो सितारा, कह्या उलंघा न किन ।
सो देखो सिपारे सोलमें, काहूं छोड़ी न सरे सुंन ॥४९॥

मेयराज हुआ महंमद पर, कई किए जाहेर बयान ।
और रखे छिपे हुकमें, वास्ते हादी गिरो पेहेचान ॥५०॥

तेहेतसरा[१] से हवा लग, एक फरिस्ता[२] खड़ा इन कद ।
ए बड़का सबन का, तो पोहोंच्या हवा सिर हद ॥५१॥

इन फरिस्ते के कई सिर, तिन सिर सिर कई मोंहों ।
मोंह मोंह कई जुबान, ए देखो इसारत फरिस्तों ॥५२॥

एक इनसे बड़े कहे, ऐसे जाएँ जाकी नाक में ।
तो भी उने सुध ना पड़े, अंदर फिरके मोंह निकसें ॥५३॥

ए मसनंद[३] मलकूत[४] की, फरिस्ता एक पातसाह ।
कोई बुजरक पोहोंचे इन लों, और पांउं कटे पुल सरात राह ॥५४॥

जो आवत अरवा नासूतमें, पकड़े वजूद नाबूद ।
सो ले सरीयत चढ़ ना सके, छूटे ना फना वजूद ॥५५॥

ले तरीकत पोहोंचे मलकूत, सो किन लई न जाए ।
करे बोहोत दौड़ आप वास्ते, ले निजस[५] न ऊंचा चढ़ाए ॥५६॥

१. पाताल । २. वैराट पुरुष । ३. गादी । ४. वैकुण्ठ । ५. इन्द्रियों के बंधन (स्वाद) के कारण ।

ए बीच फना के सब कहे, हवा समेत पलना ।
ए दिन रात आजूज माजूज, खाए सब करसी फना ॥५७॥

मारफत सागर क्यों कहूं, करी सरे में पुकार ।
इन हक ठौर के नाम धर, पूज फिरके हुए बेसुमार ॥५८॥

कोई कहे विष्णु नारायन, कोई अरहंत बतावे ।
कोई देवी देव पत्थर, पानी आग पुजावे ॥५९॥

कोई कहे बेचून है, और बेचगून ।
भी कहे बेसबी है, और बेनिमून ॥६०॥

कोई कहे निराकार है, और निरंजन ।
कोई कहे अहं बका, सबमें ब्रह्म निरगुन ॥६१॥

ए जो पैदा मोह तत्व, कही तारीकी[1] जुलमात ।
कौल दूजा हवा ला मकान, जहां से पैदा रात ॥६२॥

ए जो उरझी दुनी रात की, न पावे तौहीद राह ।
तो लिख्या सिपारे उनईसमें, बनी-आदम पूजे सब हवाए ॥६३॥

दिया हवा का कुलफ, ईमान के द्वारे पर ।
ए खोलेगा सोई सिरदार, याको पीठ देवे पैगंमर ॥६४॥

चारों चीज पूजी रात की, पानी खाक पत्थर अगिन ।
आकास पूज्या कैयों नाम धर, निराकार हवा ला सुंन ॥६५॥

ए हवा सुन्य जुलमत कही, एही हिजाब[2] रात अंधेर ।
ऊपर तले बीच दुनियां, फिरवली गिरदवाए फेर ॥६६॥

ए सबे बीच अंधेरी, किन तरफ न पाई हक ।
काहूं न पाया अर्स बका, कई हुए रात बीच बुजरक ॥६७॥

तिन पर नूर अछर, जो कायम जबरूत ।
तापर अर्स अजीम, जो कह्या बका हाहूत ॥६८॥

१. मोहतत्व । २. परदा ।

ए जो ठौर दोऊ कायम, कहें अर्स हक ।
सो ल्यावे फना बीच वजूद, ए जो फानी खलक ॥६९॥

फरिस्ता जबराईल, पैगंमरों सिरदार ।
सो मांहें पैठ ना सक्या, अर्स अजीम द्वार ॥७०॥

ना तो महंमद की हिमायतें[१], आगूं चल्या एक कदम ।
तिन राह पांच सै साल की, काटी मांहें दम ॥७१॥

आगूं चलते तिन यों कह्या, जल जाए मेरे पर ।
सो ए बीच जाए न सक्या, ए जो अर्स अकबर[२] ॥७२॥

ए साहेदी लिखी जाहेर, मेयराज नामें मांहें ।
सरहद जबरूत की, फरिस्ते छोड़ी नाहें ॥७३॥

गुनाह पोहोंच्या तिन अर्समें, इन दरगाह रूहन ।
दिल हकीकी ए कहे, अर्स कलूब[३] मोमिन ॥७४॥

खासों में खासे कहे, रबानी उमत ।
खिलवत हक हादी रूहें, अर्स हक वाहेदत ॥७५॥

कह्या हदीसों आयतों, द्वार न खोल्या किन ।
अव्वल बीच या आखिर, खुले ना रसूल बिन ॥७६॥

जंजीर द्वार भिस्तकी, अव्वल खोले महंमद ।
दिल साफ करो ए देख के, ले हदीस साहेद ॥७७॥

जेता कोई पैगंमर, रसूल नबी औलिए[४] ।
गोस[५] कुतब वली अंबिए, नबी नसीहत सिर सब के ॥७८॥

कई बड़े कहावे पीर फकीर, कई आरिफ[६] उलमा[७] ।
यार असहाब[८] कई खलीफे, हादी महंमद है सब का ॥७९॥

रसूलें बुजरकी अपनी, दई कई जहूदों को ।
पर ओ छोड़ बड़ाई अपनी, आए नहीं कदमों ॥८०॥

१. सहायता, मदद । २. महान । ३. दिल । ४. खुदा के दोस्त । ५. न्यायाधीश । ६. ब्रह्मज्ञानी ।
७. विद्वजन । ८. साहिबान ।

कई कहावें खावंद कलमें, कई साहेब सहीफे[1] किताब ।
होए न काम महंमद बिना, जिन सिर आखिरी खिताब ॥८१॥

जहूद नसारे पैगंमर, कई केहेलाए रात के मांहें ।
दिन ऊगे महंमद बुर्राक[2] के, आगूं दौड़े सब जाएँ ॥८२॥

देखो नामें मेयराजमें, किताब सिकंदर ।
अस्वार महंमद की जलेबमें, चलें प्यादे पैगंमर ॥८३॥

बैठावें आठों भिस्तमें, छोटा बड़ा जो कोए ।
जो जैसा तैसी तिनों, महंमद पोहोंचावें सोए ॥८४॥

या दोऊ गिरो दोऊ अर्सोंकी, जो बका ठौर हैं दोए ।
फरिस्ते रूहें उतरीं लैलमें, सो भी सूरत हकी से होए ॥८५॥

एही फजर दिन मारफत, सब आवें मांहें दीन ।
तबहीं मुआ दज्जाल, आया सबों आकीन ॥८६॥

एक कुरान का माजजा[3], और नबीकी नबुवत ।
अव्वल फुरमाया सब हुआ, तब होए साबित ॥८७॥

आयतें हदीसें सब कहे, खुदा एक महंमद बरहक ।
और न कोई आगे पीछे, बिना महंमद बुजरक ॥८८॥

ए जो कहे लाखों हो गए, रात में पैगंमर ।
पैगाम ल्यावे कोई हक का, तो क्यों न करे फजर ॥८९॥

कहे लाखों पैगंमर हो गए, कई और लिखे बुजरक ।
किन बका पट न खोलिया, दिए किनने किसे पैगाम हक ॥९०॥

बका तरफ न पाई काहू ने, तो द्वार खोले क्यों कर ।
क्यों बका बिन बड़े कहे रातमें, क्यों किन तरफ न कहीं पैगंमर ॥९१॥

मेयराज एक महंमद पर, दूजे हुआ न किन ऊपर ।
मेयराज हुए बिना पैगंमरों, पैगाम दिए क्यों कर ॥९२॥

१. धर्मग्रंथ । २. मेयराज की सवारी । ३. चमत्कार ।

अजूं खड़ियां इनोंकी उमतें, पूजें पानी आग पत्थर ।
सो तो कही सब रानियां[१], मांगे माजजे किया कुफर ॥९३॥
लिख्या सिपारे दूसरे, बखत नूह पैदास ।
तब कही सब कुफरान, इसलाम न गिरो कोई खास ॥९४॥
कह्या एक गिरो थी मोमिन, ले आदम लग तोफान ।
आगूं अमल इबराहीम के, हुती सबें कुफरान ॥९५॥
मोमिन गिरो एक नूह के, जिनों बीच था स्याम ।
सो पार हुई किस्ती चढ़, जो चालीस जुफ्त[२] तमाम ॥९६॥
कहे एही चालीस तूबे[३] पर, जो दरखत जिमी बीच स्याम ।
यामें न होए कोई कम, जाकी सिफत लिखी अल्ला कलाम ॥९७॥
आदम नूह तोफान लग, एक गिरोह थी नूह अमल ।
सो पार हुई किस्ती चढ़, और काफर डूबे सब जल ॥९८॥
सो भी गिरो कही महंमद की, लिखी हदीसों महंमद ।
आखिर कह्या नूह गिरो की, महंमद देसी साहेद ॥९९॥
इबराहीम के अमल में, ना इसलाम गिरो दीन ।
कही एक लड़की निमरूद की, कछू ल्याई थी आकीन ॥१००॥
लिख्या फलाने सिपारे, इबराहीम के अमलमें ।
और मुसलमान कोई ना हुता, तो लई वारसी जहूदोंने ॥१०१॥
मगज देखो मुसाफ का, सबों महंमद हिदायत ।
आसमान जिमी या जो कछू, और न काहू नसीहत ॥१०२॥
ए तीनों सूरत महंमद की, करें सब पर हिदायत[४] ।
तो लिख भेज्या हक ने, क्यों हलाक[५] होए उमत ॥१०३॥
जो बीच जिमी आसमान के, महंमद हिदायत सब पर ।
भाई महंमद अर्स खिलवत, नसीहत और न इन बिगर ॥१०४॥

१. धिक्कारे गये (मोक्षफल से वंचित) । २. जोड़ा । ३. नाव (योग माया की) । ४. शिक्षा । ५. परेशान ।

करी अगली किताबें मनसूख[1], कहे जमाने रद ।
ना नूह तोफान पीछे मोमिन, जो लों आए महंमद ॥१०५॥

कह्या तब ल्याए कई ईमान, कई रहे ईमान बिगर ।
केतेक पीछे ल्याए थे, ईमान इस्माईल पर ॥१०६॥

सो ईमान तोलो चल्या, एहिया[2] आया बखत जिन ।
तब मजाजी[3] दुनी का, ईमान न रह्या किन ॥१०७॥

सो एहिया ईसे पर, पेहेले ल्याया ईमान ।
कायम किया तिन दीन को, ए देखो दिल से बयान ॥१०८॥

दुनी कहे पैगंमर हो गए, लिखी सिफतें इनों आखिर ।
ए बका बातून क्यों बूझहीं, जो फंदे बीच माएनों ऊपर ॥१०९॥

जेता माएना मुसाफ का, किया नजूम[4] और बातन ।
सो पढ़े कहें किस्से हो गए, डालें बीच नाबूद दिन ॥११०॥

किस्से आखिरी कलाम अल्लाह के, जिन खोलें होसी हैयात[5] ।
सो पढ़े कहें होए गए, जित दुनी रानी[6] बीच जुलमात ॥१११॥

जो कहे किस्से हो गए, कहे दाग देऊं तिन नाक ।
लिख्या सिपारे उनतीस में, राह गुम हुआ नापाक ॥११२॥

लिख्या नूर नामें मिने, रूह मुरग किया गुसल ।
पर झारे बूंदें गिरीं, सो खड़े हुए पैगंमर मिल ॥११३॥

सो मुरग रूह महंमद की, तहां से बरसी बूंदें नूर ।
सो नूर से हुए पैगंमर, इनों दे पैगाम किया जहूर ॥११४॥

लाख ऊपर चौबीस हजार, कहे उठे बूंदों के ।
पैगाम दिए इनों आखिर, जो बका पट महंमदे खोले ॥११५॥

जो हो गए एते पैगंमर, तो क्यों रही अब लो रात ।
तो तबहीं बका दिन कर, उड़ाए देते जुलमात ॥११६॥

१. रद्द । २. मेहराज ठाकुर (जाहेरी में - ज़िकिरयां पैगम्बर का बेटा) । ३. नश्वर । ४. भविष्य । ५. अमर ।
६. त्यागी गई ।

एही गिरो पैगंमरों आखिरी, कही जो खासल खास ।
जाकी सिफत हदीसों आयतों, पेड़ नूर बिलंद से पैदास ॥११७॥

नूर-अनामिन अल्ला[1] तो कह्या, कुल-सैयन-मिन्नूरी[2] ।
करे इन का दावा दिल मजाजी, देखो अकल इनों सहूरी ॥११८॥

महंमद नूर हक का, यों गिरो महंमद का नूर ।
जिन किया दावा इन का, सो रहे दूर से दूर ॥११९॥

ताथें जो कछू कह्या मुसाफमें, सो सब आखिरी सिफत ।
सो क्यों बूझे दिल मजाजी, जिनों पाई न हक मारफत ॥१२०॥

जो लों ले ऊपर का माएना, तो लों छोड़ ना सके फना ।
हक हादी पाए बिना, दुनी उड़ जात ज्यों सुपना ॥१२१॥

महामत कहे मोमिनों पर, बरसत बदली नूर ।
हक बका अर्स अजीम में, पट खोल लिए हजूर ॥१२२॥

॥प्रकरण॥३॥चौपाई॥२५५॥

बाब तीनों गिरो के फैल हाल मकान

जो लों पट न खोल्या बका का, तो लों फना दुनी बीच रात ।
मारफत दिल महंमद, करे दिन देखाए हक जात ॥१॥

पेहेले सरत करी महंमदें, हक हम आवेंगे आखिर ।
द्वार खोलें तब हक बका, करें दिन सिफायत फजर ॥२॥

तबहीं दुनी पाक होएसी, तबहीं होसी एक दीन ।
जब मुआ सबोंका सैतान, तब आया सबों आकीन ॥३॥

इत इमाम करें इमामत, हक बका सूरत देखाए ।
करें मोमिनात[3] मोमिन सिजदा, कराए इस्कें खुदी उड़ाए ॥४॥

देखा देखी का सिजदा, किया होवे जिन ।
कह्या हाड़ पीठका सींग ज्यों, पीठ नरम न होवे तिन ॥५॥

१. मैं खुदा के नूर से । २. मेरे नूर से "कुल्ल-शैअन्" अर्थात् समस्त चीजे (संसार) । ३. मोमिनों को (ब्रह्म सृष्टी)।

कह्या चमड़ी टूटे पीठ की, सिर ना नीचा होए ।
कही सेर छाती मुरग गरदन, ए पीठ हाड़ चमड़ी तोड़त दोए ।।६।।

हक इलमें पट खोल के, सब को चिन्हाए करे दिन ।
अर्सों भिस्तों हद अपनी, करे कयामत उठाए बका तन ।।७।।

लिख्या बीच कुरान के, हक करें आप जो चाहे ।
दई पातसाही बनी[1] इस्माईल को, लई बनी असराईल से छिनाए ।।८।।

और लिख्या हदीसों आयतों, ले माएने मुसाफ बातन ।
सोई होसी हक नजीकी, जो दिल मोमिन अर्स तन ।।९।।

जेता कोई हक अर्स दिल, सो कहे मरद मोमिन ।
सो देखो हक इलम से, खोल रूह नजर बातन ॥१०॥

रूहें हजूर लई पट खोल के, बीच अर्स बका वतन ।
याद हादी सोई देत हैं, जो कहे हकें सुकन ॥११॥

कहे अव्वल उतरते रूहों को, रदबदल है जेह ।
सो लिखी हदीसों आयतों, सूरतें देत साहेदियां एह ॥१२॥

खोल्या नूर पार इमामें, अर्स अजीम बका द्वार ।
कराया सिजदा हजूर, इस्क पूरा दे प्यार ॥१३॥

हक हजूर रूहों ने, लई सिजदे बड़ी लज्जत ।
किया रूहों हैयाती सिजदा, ए आखिरी इमामत ॥१४॥

देखो साहेदी हदीसों आयतों, उन्तीसमें सिपारे ।
उमतें किया सिजदा, खोल अर्स बका द्वारे ॥१५॥

कहूं हुकमें साहेदी, जो हकें फुरमाई ।
सो देखो आयतों हदीसों, ज्यों दिल होवे रोसनाई ॥१६॥

सिजदा कराया इमामें, ऊपर हक कदम ।
ए आसिक रूहों सिजदा, करें खासलखास दम दम ॥१७॥

१. बेटा ।

एते दिन अर्स-अजीम का, किन कह्या न एक हरफ ।
अबलों चौदे तबक में, पाई न काहू तरफ ॥१८॥

ए हरफ सो केहेवहीं, जो रूह बका की होए ।
नूर बूंदें महंमद की, और क्यों कर लेवे कोए ॥१९॥

देखो दिल विचार के, हदीसें कुरान ।
दिल हकीकी अर्स तन बिना, होए नहीं पेहेचान ॥२०॥

लिख्या सबों किताबों, हद ऊपर सुकन ।
ए जानें सब अर्स दिल, जो लदुन्निएँ[१] किए रोसन ॥२१॥

तीन ठौर गिरो तीन के, बेवरा देखो दिल ल्याए ।
एक आम दूजे नूरी फरिस्ते, गिरो जित महंमद पोहोंचे जाए ॥२२॥

सरीयत तरीकत हकीकत, और हक मारफत ।
इन चारों की बिने इसलाम, जुदी जुदी कही जुगत ॥२३॥

इन चारों की बिने[२] इसलाम, जो हादी न देवें बताए ।
तब लग अपने मकान को, क्यों कर पोहोंचे जाए ॥२४॥

सरीयत बीच रात के, अमल चलाया नेक ।
मुसरक[३] होने ना दिया, हक कह्या एक का एक ॥२५॥

पांच बिने इसलाम की, दुनी सिर करी फरज ।
दिल मजाजी यों जानत, हम देत पीछला करज ॥२६॥

किन किन लई तरीकत, पर कोई जाए न सक्या बीच दिन ।
ना खुली हकीकत मारफत, तो क्यों पावे फजर रोसन ॥२७॥

सरीयत बिने इसलाम की, पाक करे वजूद ।
तरीकत पोहोचें मलकूत लों, आगे होए न बका मकसूद[४] ॥२८॥

बिने इसलाम हकीकत, सो खोले बातून रूह नजर ।
पोहोंचे बका नूर मकान, खास गिरो फरिस्तों फजर ॥२९॥

१. तारतम । २. नियम । ३. बहुत देवताओं का मानने वाला । ४. प्राप्ति ।

इसलाम बिने हक मारफत, पोहोंचावे तजल्ला नूर ।
ए मकान आसिक रूहों, गिरो खासलखास हजूर ॥३०॥

इत इस्क बिना पोहोंचे नहीं, बिना हक हादी निसबत[1] ।
इलम लदुन्नी[2] फुरमाए से, पोहोंचे अर्स बका खिलवत ॥३१॥

मोमिन मुस्लिम मुनाफक, बिन ईमान सोई हैवान ।
ए आखिर हिदायत हादी बिना, पोहोंचे न अपने मकान ॥३२॥

खासलखास गिरो रूहें, अर्स अजीम सूरत हक ।
और गिरो खास फरिस्तों, रहें नूर मकान बुजरक ॥३३॥

कुंन केहेते पैदा हुई, ए जो खलक आम ।
जो कही जुलमत से, तीसरी दुनी तमाम ॥३४॥

जेता पैदा जुलमत से, ए जो मजाजी दिल ।
सो दिल हकीकी मोमिन मिने, कबहूं ना सके मिल ॥३५॥

सिपारे इकईसमें, लिख्या जाहेर बंदगी बयान ।
पर हादी देखाएँ देखिए, मोमिन करें पेहेचान ॥३६॥

राह रूहानी[3] बिने बातून, न पाइए बिना हकीकत ।
सो हादी देखाएँ देखिए, गुझ साहेदी बका मारफत ॥३७॥

कही निमाज करे छे विध की, दो सरीयत एक तरीकत ।
आगूं एक हकीकत, दोए बका मारफत ॥३८॥

तिन तीन निमाजका बेवरा, एक कही नफसानी[4] ।
दूजी पाक करत हैं, वजूद जिसमानी[5] ॥३९॥

दिल बंदगी तरीकत तीसरी, मलकूत पोहोंचे पाक होए ।
दिल मजाजी जुलमत लों, आप अकल न छोड़े कोए ॥४०॥

अब बेवरा तीन निमाज का, खोले भेद की हकीकत ।
करत निमाज जबरूत में, बीच बका फरिस्ते पोहोंचत ॥४१॥

१. संबंध । २. तारतम । ३. आत्मिक । ४. इंद्रियों की । ५. शारीरिक ।

बंदगी रूहानी[1] और छिपी, जो कहीं साहेदी हजूर ।
ए दोऊ बंदगी मारफत की, बीच तजल्ला नूर ॥४२॥

ए आसिक रूहें गिरो रबानी, बीच नूर तजल्ला मांहें ।
दई साहेदी महंमदें मेयराज में, जो हकें केहेलाई मसी जुबांएँ ॥४३॥

एही कुंजी कलाम हक इलम, खोले सब मगज किताब ।
आगूं अर्स दिल मोमिनों, सो खोले जिन हादी खिताब ॥४४॥

कहे हदीस निमाज का, भेद न पाया किन ।
हादी तीन सूरत आए बिना, काहू खोली नहीं बातन ॥४५॥

अग्यारे सदी दस साल कम, तो लों खोल्या न पट कुरान ।
पाक बिना मत छुइयो, ए दिल दे करो बयान ॥४६॥

सिपारे सत्ताईस में, लिख्या बीच फुरमान ।
पाक बिना मत छुइयो, यों कहे हजरत कुरान ॥४७॥

अब लग दुनी यों जानिया, माएने न पाए किनने ।
तो बोले जुदे जुदे आरिफ[2], जो सक है सबों में ॥४८॥

और किए मुहककों[3] माएने, जुदे जुदे दिल ल्याए ।
तिन सबों से तेहेकीक, माएने गुझ क्यों समझाए ॥४९॥

कह्या याही के तरजुमें[4], जो दिल घसे न छाती से ।
अब लों छिपा मता ए तो रह्या, जो जाहेर न किया किनने ॥५०॥

तब से परदा मुंह पर, रह्या हजरत मुसाफ[5] के ।
सो सदी अग्यारहीं लग, किन दीदार न पाया ए ॥५१॥

पाक न होए पानी खाक से, और इलाज न पाकी कोए ।
बिना पाक न हुकम छुए का, एक पाक[6] हक से होए ॥५२॥

कह्या मुसाफ नजीक हक के, सो हक नजीक खोलाए ।
नापाक इत आए ना सके, ए इन पाकी खोल्या जाए ॥५३॥

१. आत्मिक । २. ब्रह्मज्ञानी । ३. जानकार, खोजी । ४. अनुवाद । ५. कुरान । ६. पवित्र ।

हादी मोमिनों बीचमें, पाइए हक इस्क ईमान ।
ए पाकी हैं मोमिनों, होए खाली सोर जहान ॥५४॥

पेहेला दीदार होए मोमिनों, बीच आखिरी पैगंमर ।
ए मुसाफ कह्या आखिरी, देवे दीदार आखिर ॥५५॥

बखत मंहमद के उठने, और आवे अस्हाब[१] ।
तब सो खोले मुसाफ को, पोहोंचे लग कोसे नकाब ॥५६॥

ए पट खोल करें जाहेर, तब हुई तौहीद[२] मदत ।
दिल पाक करो इन आब सें, मुसाफ तब मोंह देखावत ॥५७॥

कह्या हक सेहेरग से नजीक, सो हक अर्स मोमिन दिल ।
ना ऊपर तले दाएँ बाएँ, ए बतावें मुरसद[३] कामिल[४] ॥५८॥

जब पट अपने मोंह से, किया मुसाफें दूर ।
तब नूर बका जाहेर हुआ, और तजल्ला नूर ॥५९॥

जब मोंह मुसाफें खोलिया, तब पट न आड़े हक ।
तब दीदार पावे दुनियाँ, जो हक इलमें हुई बेसक ॥६०॥

दुनी तरफ न पावे हक की, और मुसाफ हुआ पास हक ।
हक मुसाफ आड़े एक पट, सो पट उड़े देखे खलक ॥६१॥

हक नजीक सेहेरग से, पर तरफ न पावे कोए ।
ढूंढ़या अव्वल से अब लग, पर किन बका न रोसन होए ॥६२॥

सब सय[५] फना कही, क्यों बका कह्या ढ़िग तिन ।
जिमी बका अर्स ढ़िग फना, ए सक सुभे रही सबन ॥६३॥

ए मुरसद कामिल बिना, और न काहूं खोलाए ।
अब हादिएँ ए पट तो खोल्या, जो गिरो सरतें पोहोंची आए ॥६४॥

मुसाफ उठया तो उत से, जो बिकर[६] रही फुरकान[७] ।
याके वारस मसी मोमिन, जो कहे अहेल[८] फुरमान ॥६५॥

१. साहिबान । २. अद्वैतवाद । ३. धर्मगुरु । ४. योग्य । ५. चीज । ६. कुमारी । ७. कुरान । ८. वारस ।

तो जुदे जुदे कहे जंजीरों, देखो दाखले मिलाए ।
पेहेचान जंजीर जंजीरों, ज्यों दिल पाक होवे ताए ॥६६॥

मुईनुद्दीन ने भेजी हदीसें, देने मुरीद[1] आकीन ।
तालिब[2] होए सो देखियो, करी जाहेर कुतबदीन ॥६७॥

कह्या हदीसमें रसूलें, स्वाल किया उमर ।
सरा तरीकत हकीकत, तीनों की देओ खबर ॥६८॥

पांच बिने कही तीनों की, जाहेर किए बयान ।
निसां होए तालिब की, देखो अर्स दिल पेहेचान ॥६९॥

कह्या उठें पैगंमर अस्हाब, एही आखिरी किताब ।
खोलें बीच आखिरी उमत, जिन सिर आखिरी खिताब ॥७०॥

नूर सागर सूर मारफत, सब दिलों करसी दिन ।
रात गुमराही कुफर मेट के, करे चौदे तबक रोसन ॥७१॥

हक मारफत दिन होएसी, दिल महंमद सूर नूर ।
हक अर्स बका जाहेर किए, मिटी हवा तारीक[3] देख जहूर ॥७२॥

तो कलाम अल्ला की आयतें, और हदीसें महंमद ।
ए मोमिन देखें दिल अर्स में, ले मुसाफ मगज साहेद ॥७३॥

कहूं बेवरा आदम औलाद, तिनमें कही विध तीन ।
सोई समझें हक इलमें, जिनमें इस्क आकीन ॥७४॥

कही एक गिरो पैदा जुलमत से, तिन के फैल हाल जुलमत ।
सो दुनी बिन कछू न देखहीं, दुस्मन दिल पर सखत ॥७५॥

दूजी गिरो फरिस्तन की, भई पैदा नूर मकान ।
उतरी लैलत कदरमें, सो ताबे न होए सैतान ॥७६॥

गिरो तीसरी नूर बिलंदसे, ताको कौल फैल हाल नूर ।
रूहें अर्स दिल उतरीं लैलमें, करें हमेसा हक जहूर ॥७७॥

१. शिष्य । २. जिज्ञासु । ३. अंधकार ।

कहे मोमिन नूर सूरतमें, जो बीच अर्स हमेसगी ।
एक तन मोमिन अर्स में, दूजी सूरत सुपन की ॥७८॥

तो कहे सेहेरग से नजीक, खासलखास बंदे हक के ।
किए अर्स तन से रूबरू, जो नूर बिलंद से उतरे ॥७९॥

जाकी न असल अर्स में, सो सेहेरग से नजीक क्यों होए ।
वह फना बका को क्यों मिले, वाकी अकल में न आवे सोए ॥८०॥

हकें कह्या छबीसमें सिपारे, मैं मेरे बंदोंसे अकरब[१] ।
वे मोमिन एक तन अर्समें, ताए सेहेरग से नजीक रब ॥८१॥

रूबरू होना अर्स तन से, इन फना वजूद नासूत ।
नजीक न होए बिना अर्स तन, नूर लाहूत परे हाहूत ॥८२॥

दुनी असल जिनों तारीकी[२], सो इलमें करो पेहेचान ।
ताको नजीक सेहेरग से, खाली हवा ला मकान ॥८३॥

नाहीं करें बराबरी है की, क्यों मिले दाखला ताए ।
बका नींद उड़े उठें अर्समें, फना नींद उड़े उड़ जाए ॥८४॥

सुपन उड़े जब मोमिनों, उठ बैठें अर्स वजूद ।
कहे खासे बंदे दरगाही रूहें, कदमों हमेसा मौजूद ॥८५॥

लिख्या है हदीसमें, मोमिन असल अर्स मांहें ।
ताको मोमिन जिन कहो, जाकी असल अर्समें नाहें ॥८६॥

ए वेद कतेब पुकारहीं, कोई पोहोंच्या न अपनी अकल ।
बिना हादी गोते खावहीं, जो तन मोमिन अर्स असल ॥८७॥

तो क्यों पोहोंचें दिल मजाजी, जाकी पैदास कही जुलमत ।
सो चाहे बिना हादी असल, जबराईल न पोहोंच्या जित ॥८८॥

तो कही रात दुनी इन वास्ते, दिए बंदगी फरज लगाए ।
ले तरीकत चल कोई ना सक्या, गए पांउं पुल-सरातें कटाए ॥८९॥

१. अति निकट । २. मोहतत्व ।

तरीकत भी ले ना सके, सो रातै की बरकत ।
जो तरीकत ले पोहोंचे मलकूत, तो भी आड़ी हवा जुलमत ॥९०॥

ले हिसाब दई हैयाती, कह्या वास्ते महंमद नूर ।
भिस्त तो कही तले नूर के, रखे दिल बीच बका जहूर ॥९१॥

खास गिरो फरिस्तन की, ए जो पैदा नूर मकान ।
सो पोहोंचे बका बीच नूर के, ले हक इलम ईमान ॥९२॥

हक हकीकत मारफत, रूहें इस्कें राह लई जाए ।
सो बिन चले पाँउं हक बका, दई सेहेरग से नजीक बताए ॥९३॥

हक खासलखासों को, खेल देखावें लैल का ।
नूर-तजल्ला बीच में, खेल देखें बैठे बीच बका ॥९४॥

ए क्या जानें मजाजी दुनियां, जो तारीकी से पैदास ।
वाके दाखले मिलावे आपमें, जो अर्स रूहें खासलखास ॥९५॥

आयतों हदीसों माएने, जो देखो हक इलम ले ।
तो खासलखास खासे आम की, तीनों जाहेर देखाई दे ॥९६॥

हुकम हुआ तीनों गिरो को, कर महंमद हिदायत ।
हकीकत और तरीकत, तीसरी जो सरीयत ॥९७॥

खासलखासों दे हिकमत[१], ज्यों रहे न सुभेसक ।
बिगर वास्ते पोहोंचे बीच, अर्स अजीम बका हक ॥९८॥

तरीकत देखाओ खास दूजी को, केहे मीठी हलीमी[२] जुबांन ।
तेरा हुकम न फेरे ए गिरो, पोहोंचाओ बका नूर मकान ॥९९॥

और जिद कर आम खलक सों, वे तेरे सामी ल्यावें हुज्जत[३] ।
ताए समझाओ जिदसों, जो जाहेरी चले सरीयत ॥१००॥

लिखी तीनोंकी अकलें, और तासों पाए जो फल ।
सो लिखी बीच आयतों मुसाफ, सो देखो मोमिन अर्स दिल ॥१०१॥

१. बुद्धिमता । २. नम्रता । ३. हठ ।

सरीयत तरीकत हकीकत, ए तीनों अहेल कुरान ।
जिन जो पाई अकल, तिन तैसी हुई पेहेचान ॥१०२॥

जो आयत हब्बूनी हब्बहुंम, तिन किए तरजुमें[1] तीन ।
पेहेचान जैसी तैसी मजल, फल सोई देवे आकीन ॥१०३॥

बीच लिख्या हदीसों आयतों, हक खिलवत के सुकन ।
सो क्यों पावें दिल दुस्मन, बिना अर्स दिल मोमिन ॥१०४॥

बिना हक हादी निसबत, कोई होए न सके दाखिल ।
मारफत पाइए मुसाफ की, जो हक दें कुल्ल अकल ॥१०५॥

लिख्या सिपारे तीसरे, इबराहीम पूछा हक से ।
ए जो मरत है दुनियां, क्यों कर मुरदे उठें ॥१०६॥

तब लिख्या आया आयतमें, बाजे पैदा कलमें कुंन ।
एक कहे एक हाथ से, कहे बाजे[2] दो हाथन ॥१०७॥

एक गिरो इप्तदाए[3] से, मौजूद से ले आए ।
दूजी गिरो खिलकत[4] और से, इनो वास्ते करी पैदाए ॥१०८॥

ए तीनों गिरो का बेवरा, देखो दाखले मिलाए ।
एक कुंन दूजे पाक फरिस्ते, तीसरी असल खुदाए ॥१०९॥

एक हाथ सूरत महंमद की, दूजे दो हाथ सूरत दोए ।
ए तीनों कही हाथ से, ए दोए तीन एक सोए ॥११०॥

कोई कहे कहां कह्या हाथ से, देखो सिपारे तेईसमें ।
देखो सहूर कर मोमिनों, कह्या आदम पैदा हाथ से ॥१११॥

महामत कहे हक इलमें, बेवरा कह्या नेक ए ।
दो गिरो पोहोंचाई दोऊ अर्सों में, औरों पट खोले भिस्त आठों के ॥११२॥

॥प्रकरण॥४॥चौपाई॥३६७॥

१. अनुवाद । २. कोई । ३. शुरुआत से । ४. जनता ।

बाब तीनों फरिस्तों का बयान

तीनों फरिस्तों का बेवरा, लिख्या बीच कुरान ।
सो खोल हकीकत मारफत, हादी मोमिन देवें पेहेचान ।।१।।
बयान बड़े बोहोत निसान, ताथें जुदे जुदे लिखे जात ।
एक दूजे के आगे जो कहिए, तो कागद में न समात ।।२।।
जुदी जुदी सनंधों साहेदी, हकें भेजी कई किताब ।
जासों पढ़ा या अनपढ़ा, सब रोसन होए सिताब ।।३।।
छिपाया देखाऊं जाहेर कर, जो हकें फुरमाए ।
त्यों देखाऊं कर माएने, ज्यों छोटे बड़े समझी जाए ।।४।।
हलाल[1] हराम[2] दोऊ छिपे हुते, सो बयान किए हुकम ।
ले अकल असराफील, नबी कदमों धरे कदम ।।५।।
हक साथ मैं आऊंगा, असराफील ईसा इमाम ।
लिखे फैल सबन के, जासों पेहेचानिए तमाम ।।६।।
यों केती कहूं निसानियां, हैं हिसाब बिन ।
पर ए मीठा लगसी मोमिनों, औरों लगसी सखत सुकन ।।७।।
ए कह्या आयतों हदीसों, जिन सिर आखिरी खिताब ।
जाहेर देखावें दिन कर, खोल माएने मगज किताब ।।८।।
यों दिन बका जाहेर हुआ, तब देखसी सब निसान ।
नजरों आवसी कयामत, होसी रोसन सबों पेहेचान ।।९।।
कहे बिगर ना रेहे सकों, जो हक हादी फुरमाए ।
हक बका के अर्सों के, पट महंमद मसी खोलाए ॥१०॥
ए इसारतें कोई न समझया, ना तो जाहेर दई बताए ।
कह्या गुनाह किया अजाजीलें, सो सब दिलों करी खताए[3] ॥११॥
अव्वल आए कही महंमदें, कह्या आगूं होसी बड़े निसान ।
सो भी वास्ते रूह मोमिनों, देख के ल्यावें ईमान ॥१२॥

१. जायज़ (उचित) । २. नाजायज (अनुचित) । ३. गुनाह, अपराध ।

जबराईल साथ रसूल के, आया बीच अव्वल ।
कुरान ल्याया बीच रात के, चलाया सरा अमल ॥१३॥

एक जबराईल फरिस्ता, और महंमद पैगंमर ।
राह देखाई मोमिनों, अर्स चढ़ उतर ॥१४॥

जबराईल नूर मकान लग, आगूं न सक्या चल ।
ना तो ल्यावने वाला मुसाफका, कहे आगूं जाऊं तो जाए पर जल ॥१५॥

जबराईल जबरूत से, याकी असल नूर मकान ।
सोहोबत करी महंमद की, तो ल्याया हक फुरमान ॥१६॥

जो रूह अर्स महंमद की, तिनको न सक्या पेहेचान ।
तो न आया बड़े नूर में, छोड़्या न नूर मकान ॥१७॥

चल न सक्या जबराईल, रह्या हद जबरूत ।
मासूक कह्या महंमद को, तो पोहोंच्या बका हाहूत ॥१८॥

सो ए वतन रूह मोमिनों, जित पोहोंच्या न जबराईल ।
एक महंमद संग आखिरी, बीच पोहोंच्या असराफील ॥१९॥

इत और न कोई पोहोंचिया, ए हक हादी मोमिनों वतन ।
तो असराफील आइया, करने बका सबन ॥२०॥

महंमद सिफायत सब को, कुल्ल सैयन[1] महंमद नूर ।
सो बिन फरिस्ते क्यों होवहीं, तो लिया बीच रूह हजूर ॥२१॥

तो अव्वल आखिर महंमद, महंमद सब अवसर ।
सब नूर इनका कह्या, कोई बखत न इन बिगर ॥२२॥

साथ महंमद मेंहेंदी असराफील, ले मगज मुसाफी बल ।
तो आया बीच अर्स अजीम के, पोहोंच्या बीच बड़े नूर असल ॥२३॥

ना तो असराफील है नूर का, क्यों फरिस्ता सके आगे आए ।
पर मगज मुसाफी नूर में, रूह महंमद लिया मिलाए ॥२४॥

१. मौमिन ।

ए नूरी तीनों फरिस्ते, इनों की असल एक ।
ए किया महंमद मोमिनों वास्ते, हक इलमें पाइए विवेक ॥२५॥

कह्या सिजदा कर आदम पर, जो सब के अव्वल आदम ।
अजाजीलें देख्या आप को, तो न पकड़े रसूल कदम ॥२६॥

हकें आप पढ़ाइया, अंगुली से आदम को ।
दे इलम नाम पढ़ाए, सक न सुभे इनमों ॥२७॥

हुकम हुआ आदम को, कहे फरिस्तों आगे नाम ।
करें तुझ पर सिजदा हैयाती, मिल कर सब तमाम ॥२८॥

सो पढ़े कहें नाम आदमें, जाहेर किए सब पर ।
तब फरिस्तों किए सिजदे, एक अबलीस बिगर ॥२९॥

जो किए होते एते सिजदे, ऊपर उस आदम ।
जाको हक करें एता बड़ा, सो क्यों रद करे हुकम ॥३०॥

हैयात हुए के होसी आखिर, जो हुए नाम जाहेर सब पर ।
तो बूझ हैयाती दुनियां, ए सरे से छिपी रही क्यों कर ॥३१॥

ए किस्से आखिरत के, पढ़े डारें गुजरों में ।
काम कयामत का रोसन, होसी इन किस्सों से ॥३२॥

जो हक के सब फरिस्ते, किया सिजदा आदम पर ।
तो अब लों तिन हुकम से, सरा होत नहीं मुनकर ॥३३॥

कहूं हकीकत फरिस्तों, मोमिनों करो पेहेचान ।
तबक चौदे फरिस्ते, तिल जेता न खाली मकान ॥३४॥

जेता कोई फरिस्ता, बीच हैवान[१] या इनसान ।
बिना फरिस्ते जरा नहीं, बीच जिमी या आसमान ॥३५॥

एक छोटी बड़ी बूंद पानी की, सो भी फरिस्ता सब ल्यावत ।
या जड़ों दरखतों फरिस्ते, या पर पेट पांउं चलत ॥३६॥

१. पशुवत ।

देखो सहूर कर मोमिनों, हक के सब फरिस्ते ।
ए बखत करसी आखिर, किन नबी पर किए सबों सिजदे ॥३७॥

पेहेचानो अजाजील को, सिजदा न किया आदम पर ।
दूर हुआ ले लानत, सो सबों लगी क्यों कर ॥३८॥

फरिस्तों अजाजील सिरदार, अबलीस जिनों वकील ।
पोहोंचाया सबों सय[1] दिलों, पलक न करी ढील ॥३९॥

ना किया अजाजीलें सिजदा, तो सब रहे सिजदे बिन ।
सब दुनियां ताबे तिन के, ताथें किया न सिजदा किन ॥४०॥

तो लानत हुई तिन को, वजूद देख गया भूल ।
देख्या न तरफ रूह की, वह तो हक का नूरी रसूल ॥४१॥

हकें आदम कह्या रसूल को, वह तो अबलीसें किया ख्वार ।
गेहूं खिलाए काढ़या भिस्त से, करके गुन्हेगार ॥४२॥

हिरस[2] हवा मोर सांप जिद[3], साथ निकस्या अबलीस ले ।
क्यों हकें इन आदम पर, नूरी पे कराए सिजदे ॥४३॥

जिन सब जिमी पर सिजदे, किए हक पर बेसुमार ।
उन आदम के वास्ते, क्या हक नूरी कों देवें डार ॥४४॥

एता देखाया जाहेर कर, दई नूरी को लानत ।
दुनी तो न खोले आंख दिल, जो असल पैदा जुलमत ॥४५॥

जो लों ले ऊपर के माएने, दुनी छूटे न उपली नजर ।
तो भी न लेवें बातून, जो यों लिख्या जाहेर कर ॥४६॥

तो कह्या मजाजी दिल को, गोस्त का टुकड़ा ।
तिन दिलों पातसाह दुस्मन, और दिल तो कह्या मुरदा ॥४७॥

कही लानत[4] अजाजील को, सो लगी सब दुनियां को ।
एती फरिस्ते की पाक बंदगी, क्यों दुनी मारी जाए इनसों ॥४८॥

१. कपट । २. लोभ, हवस । ३. वैमनस्य, रंजिस । ४. धिक्कार ।

गुनाह एक अबलीस के, क्यों सब दुनी मारी जाए ।
पाक सरा हक अदल, सो ऐसे क्यों फुरमाए ॥४९॥

पाक फरिस्ते पाक सिजदे, बेसुमार किए हक पर ।
तिन बदले दुनी को दोजख, क्यों देवें कादर ॥५०॥

जो न लेवें हकीकत, नजर खोल बातन ।
तो लों अंधेरी ना मिटे, दिल होए नहीं रोसन ॥५१॥

ए कलाम नजूम और बातून, मांहें हक हकीकत ।
हक इलमें खोले रूह नजर, तब दिन ऊगे बका मारफत ॥५२॥

ए तीनों फरिस्ते नूर से, हुए पैदा तीनों तालब[1] ।
जिन जैसा चीन्हा महंमद को, तिन तैसा पाया मरातब ॥५३॥

जिन जैसी करी दोस्ती, तिन तैसी पाई बकसीस ।
दूर नजीक या अंदर, देखो माएने आयत हदीस ॥५४॥

बंदगी का फल मांगिया, नूरी फरिस्ते हक पे ।
तिन बदले दुनी सब दोजख, क्यों डारी जाए आग में ॥५५॥

ए इन्साफ सरा न करे, दुरस्त माएने बातन ।
उपले माएने ले आप सिर, सिफत जो मोमिन ॥५६॥

ना तो अजाजील भी नूर से, दे गुमाने डारया दूर ।
एक रह्या दरम्यान में, एक मांहें आया हजूर ॥५७॥

हकें महंमद मोमिनों वास्ते, कई मेहेर कर खेल देखाए ।
एक दूर किए इनों वास्ते, एक नजीक लिए बोलाए ॥५८॥

मोमिनों की सरीयत में, आया मैकाईल[2] बुध बल ।
पीछे बीच हकीकत, आया जबराईल सामिल ॥५९॥

आखिर आए असराफीलें, खोले मुसाफ मारफत द्वार ।
दिन बका किया जाहेर, खोले अर्स अजीम नूर पार ॥६०॥

१. चाहने वाला । २. ब्रह्मा ।

महामत कहे ए मोमिनों, कही हकीकत फरिस्तों ।
अब कहूं कजा और फितना, जो उठया बरारब मों ॥६१॥

॥प्रकरण॥५॥चौपाई॥४२८॥

बाब कजा का

जैसा अमल रात का, चाहिए ज्यों चलाया ।
बीच सरे जबराईलें, किया हक का फुरमाया ॥१॥

रसूलें सरा रात का, चलाया हक अदल ।
जब रसूल जबराईल ले चले, तब क्यों चले अदल अमल ॥२॥

कजा कही तीन सकस की, एक भिस्ती दोए दोजख ।
भिस्ती हक को चीन्ह के, अदल कजा करी हक ॥३॥

कही कजा दूजे सकस की, हक से करी चिन्हार ।
पर अदल कजा तो भी ना हुई, तो लिख्या बीच नार ॥४॥

तीसरे जो कजा करी, अपनी जाहिल[१] अकल ।
सो तो कह्या दोजखी, आगे कजा न सकी चल ॥५॥

कह्या साहेदी भी रवा[२] नहीं, जिन को नहीं ईमान ।
और रवा नहीं खूनी की, ना रवा खुदी गुमान ॥६॥

कही अदल यों साहेदी, कहां साहेद पाइए सोए ।
इन जमाने नुकसानमें, अदल[३] कजा क्यों होए ॥७॥

अब्दुल्ला बिन[४] उमरें, छोड़ कजा दिया जवाब ।
सोए लिख्या बीच हदीसों, सुनो तिनों का सवाब ॥८॥

कहे उस्मान सुन अब्दुल्ला, कजा करता था उमर ।
सो तो तेरी वारसी, तूं छोड़े क्यों कर ॥९॥

कहे अब्दुल्ला उस्मान को, कजा न मुझ से होए ।
मैं पाई खबर रसूल से, कर सकसी ना अदल कोए ॥१०॥

१. मूरख, अज्ञान । २. उचित, स्वीकृत । ३. सच्चा न्याय । ४. बेटा ।

कजा करते उमर को, कदी सूझत नाहीं सुकन ।
तब पूछत जाए रसूल को, सो सब करत रोसन ॥११॥

रसूल अदल कछू चाहते, तब जबराईल ल्यावत खबर ।
तो कजा करता था उमर, जो रसूल थे सिर पर ॥१२॥

बोहोत कही उस्मान ने, कजा न करी कबूल ।
मैं इन्साफ अदल कर ना सकों, तो कहां पाऊं जबराईल रसूल ॥१३॥

कजा अदल कही हक की, सो इत चली एते दिन ।
कही साहेदी इन भांत की, आगे क्यों चले रसूल बिन ॥१४॥

और भी देखो साहेदी, जो रसूलें फुरमाए ।
जब हक ईमान तरफ देखिए, तो अब क्यों कजा करी जाए ॥१५॥

कह्या रसूलें माज को इमन, अदल कजा करो जाए ।
क्यों कर करेगा अदल, सो मो कों कहो समझाए ॥१६॥

तब कह्या माज बिन[1] जबलें, करूं कजा देख मुसाफ ।
कहे रसूल जो तूं अटके, तो क्यों करे इन्साफ ॥१७॥

सुंनत जमात राह लेय के, करूं कजा अदल ।
कहे रसूल जो इत अटके, कहे करों अपनी अकल ॥१८॥

तब मारया रसूलें छाती मिने, केहे के अल्हंमदो-लिल्लाह[2] ।
कही रजामंदी[3] खुदाए की, है सिर रसूल अल्लाह ॥१९॥

ताथें अव्वल कजा महंमद लग, पीछे अदल क्यों होए ।
हक तरफ का सिलसिला, क्यों कर पाइए सोए ॥२०॥

जबराईल साथ महंमद, सो तो हुए बीच परदे ।
अब अदल कजा बीच दुनी के, कौन चलावे ए ॥२१॥

रह्या अदल इस दिन लों, कहे हदीस महंमद ।
आगे अदल ना चल सके, याही लग थी हद ॥२२॥

१. बेटा । २. खुदा बचाए । ३. स्वीकृति ।

पीछे जमाने रसूल के, पैदा होसी बलाए[1] बतर[2] ।
अदल न चले तिनमें, एक रसूल बिगर ॥२३॥

कह्या जमाना आवसी, झूठा और नुकसान ।
यार अस्हाबों[3] कतल, तरवार उठसी जहान ॥२४॥

जब रसूल आवें फेर कर, खोलसी द्वार हकीकत ।
खतम है याही पर, होवे तबहीं अदालत ॥२५॥

सब बखतों कहे रसूल, अव्वल बीच आखिर ।
कही कजा रसूल जुबांए, करे साँच सबों पैगंमर ॥२६॥

देखावें खोल मुसाफ दिल, सक कुफर उड़ावे सब का ।
कर कजा साफ अदल, सो पावे तौहीद राह ॥२७॥

कजा करे फजर कर, हकीकी अदालत ।
सबों दिलों करे अदल, दिल सूर महंमद मारफत ॥२८॥

सब सय सिर महंमद की, आखिर कही हिदायत ।
और छोटा बड़ा जो कोई, कही महंमद इमामत ॥२९॥

नबियों सिर नबी कह्या, सिर पैगंमरों पैगंमर ।
आगे होए लेसी सब को, बीच बका पट खोल कर ॥३०॥

पेहेलें कबर से मैं उठूं, मेरे भाइयों की खातिर ।
ज्यों काम करता हों अव्वल, त्यों करोंगा उठ आखिर ॥३१॥

मैं नजूम कह्या भाइयों वास्ते, पीछे कूच किया दुनी से ।
सोई भाइयों आगे नजूम, आए खोलों मेरा मैं ॥३२॥

रसूले कह्या अबीजर को, कहां रेहेता मेरा गम ।
कह्या मैं नहीं जानत, कहो रसूल अल्ला के तुम ॥३३॥

तब फेर कह्या रसूल ने, मेरा गम है भाइयों मांहें ।
कहे अबीजर ऐसे भाई, सो क्या अब इत नाहें ॥३४॥

१. विपत्ति । २. बदतर, बुरे से बुरा । ३. साहिबान ।

रसूल कहे आखिर आवसी, कह्या क्यों पेहेचानों तिन ।
कहे बड़ी सिफत है तिन की, वाकी पेसानी[१] रोसन ॥३५॥

तब अबाबकर यारों कह्या, क्या भाई न तुमारे हम ।
रसूल कहे भाई और हैं, यार हमारे तुम ॥३६॥

जो हकें इलम मोहे दिया, सो देसी इमाम भाइयों को ।
बलाए दफे दुनी रिजक[२], सो भी हक करे वास्ते इनों ॥३७॥

बिन खुदी बिन गुमान, और साफ दिल ईमान ।
सरे दो साहेद चाहिए, ऐसे सिदक[३] मुसलमान ॥३८॥

ऐसे तो पाइए बीच फजर, जो अर्स दिल कहे मोमिन ।
करें कजा मुसाफ ले, सो भी बीच गिरो इन ॥३९॥

तो कजा उतलों अटकी, ताही दिन बदल्या बखत ।
रसूल खड़े थे ले सिदक, पीछे उठे फितुए[४] आखिरत ॥४०॥

पीछले सरे दीन मनसूख[५], सबों किए जो थे बीच रात ।
आए पैगंमर सब इत, कर दिन उड़ाई जुलमात ॥४१॥

ए सिपारे उनतीसमें, सब लिखे हैं सुकन ।
ए बेवरा करे लदुन्नी, वारस जो अर्स तन ॥४२॥

सांचे साहेद इन उमतें, हक की कजा अदल ।
यों कजा महंमद जुबांए, करें सिफायत अर्स दिल ॥४३॥

एक दीन होसी याही से, द्वार खोले हकीकत ।
दिन देख सिपारे तीसरे, डूबी खुदी रात जुलमत ॥४४॥

मैं मैं करता रात का अमल, कह्या गैर हक था नाबूद ।
सूर ऊगे मारफत सब मिले, हुआ सबों मकसूद[६] ॥४५॥

मोमिन नजीकी हक के, जाको हकें दई विलायत[७] ।
नूर पार जाको वतन, करें आखिर अदालत ॥४६॥

१. मस्तक । २. खुराक । ३. ईमानदार, निष्कपट । ४. दंगा - उपद्रव । ५. रद्द । ६. मकसद (उद्देश्य) पूरा होना । ७. परमधाम

विलायत दई हकें इनको, यासों चीज पाइए इसलाम ।
तो हिजाब[1] न आड़े वजूद, हिजाब न आड़े काम ॥४७॥

हिजाब न रह्या बीच फकीरी, ऐसा हक इलम बेसक ।
यों नजीक खुदाए के, अदल कजा करे हक ॥४८॥

महामत कजा अदल, करे रसूल तीन सूरत ।
बसरिएँ मांग्या जिदनी[2] इलम, कजा हकी सूरत जुबां कयामत ॥४९॥

॥प्रकरण॥६॥चौपाई॥४७७॥

बाब फितने का

मांगी रसूलें रेहेमत[3], जिमी स्याम इमन ।
तब अर्ज करी आरबों, नबी दिया न जवाब तिन ॥१॥

फेर मांगी रसूलें रेहेमत, जिमी स्याम इमन को ।
तब फेर अर्ज करी आरबों, क्या है बरारबमों ॥२॥

तब फुरमाया रसूल ने, है फितना सोर तुम मांहें ।
स्याम इमन जिमी बचोगे, और खैर काहूं नाहें ॥३॥

सोए देखोगे जाहेर, मेरे पीछे बीच करन[4] ।
सोई पातसाही यारों की, होसी फितना बीच खलीफन ॥४॥

रसूल खड़े टेकरी[5] पर, कह्या देखत यारों तुम ।
कह्या हक जानें या रसूल, जानत नाहीं हम ॥५॥

तब कह्या रसूलें हदीस में, ए जो सैतान का फितना ।
सो आवत बीच बरारब, मैं देखत हों इतना ॥६॥

आवेगा बरसात ज्यों, छोड़े ना कोई घर ।
मैं केहेता हों तुम देखियो, ऐसा होसी मुझ बिगर ॥७॥

कह्या मेरी उमत में, उठेगी तरवार ।
सो रेहेसी लग आखिर, ऐसा होसी बखत ख्वार ॥८॥

१. पडदा । २. जिंदनी इलम - हैयात करने वाला - एक दीन में लानेवाला ज्ञान । ३. कृपा । ४. कीचड़, अंधकार । ५. टीला

और कह्या बीच हदीस के, मेरे पीछे होसी इमाम ।
मैं डरता हों तिन से, गुम करसी गिरो तमाम ।।९।।

दुनियाँ भी ऐसी होएसी, दिल अबलीस सैतान ।
वजूद होसी आदमी, दिल कहूं न पाइए ईमान ॥१०॥

नाम मेरा चलावसी, कहेंगे तरीका महंमद ।
सुंनत जमात कौल तोड़ के, जुदे पड़सी कर जिद ॥११॥

केहेसी हम सुनंत जमात हैं, राह छोड़सी बीच की असल ।
मेरा तरीका छोड़ के, चलसी अपनी अकल ॥१२॥

जब हुए हिजाबमें[१] रसूल, तबहीं खतरा पड़्या बीच यार ।
तबहीं आया बीच फितना[२], पड़ी जुदागी बीच चार ॥१३॥

सफर[३] बखत रसूल के, तीन हुए न खबरदार ।
बखत गए आए खड़े, लगे करने और विचार ॥१४॥

अली आए खड़ा कबर पर, काढ़ के जुल्फिकार[४] ।
कह्या न छोड़ोंगा किनको, आइयो होए हुसियार ॥१५॥

तब चारों अपने हुए, हुआ फितना बीच जोर ।
सफर पीछे रसूल के, दिन दिन बाढ़या सोर ॥१६॥

अब देखो दिल विचार के, कैसा बीच पड़्या इनमें ।
ऐसी दुनी दोस्ती भी न करे, जैसी हुई जमात से ॥१७॥

तीन यारों के जुदे हुए, करके बीच करार ।
हमहीं सुंनत जमात हैं, खासी उमत खासे यार ॥१८॥

इतथें अली के जुदे हुए, बैठ फितने किया पसार ।
कई हुइयां लड़ाइयां जमातसे, कई कतल किए तरवार ॥१९॥

लेने को बुजरकियां, जमात मारी समसेर[५] ।
मारे मराए यार अस्हाबों, ऐसा फितने किया अंधेर ॥२०॥

१. परदे में (मृत्यु) । २. झगड़ा । ३. परलोक यात्रा । ४. इलाही तलवार । ५. तलवार ।

कोई न छोड़या घर आरब, बीच फितना हुआ सबमें ।
कह्या हदीसों सोई हुआ, सबुर न किया किननें ॥२१॥
ए सब फुरमाया हुआ, देखो आयतों हदीसों विचार ।
सो आए सदी लग आखिरी, आई किबले से पुकार ॥२२॥
ए नीके दिल विचारियो, माएना हदीसों आखिरत ।
फसल आई अर्सों भिस्तों की, हुआ दिन हक बका मारफत ॥२३॥
महामत कहे ए मोमिनों, कही फितने की हकीकत ।
अब कहूं सातों निसान, जिन पर मुद्दा कयामत ॥२४॥

॥प्रकरण॥७॥चौपाई॥५०१॥

बाब चारों निसानका-दाभतूलअर्जका निसान

आए लिखे बड़ी दरगाह[१] से, इसलाम के खलीफों पर ।
उठी बरकत मुसाफ सफकत, दुनी हुई ईमान बिगर ॥१॥
बाकी रह्या क्या इसलाम में, जब हक मता लिया छीन ।
सो लिखे सखत सौं[२] खाए के, उठ्या हम से नूर झंडा आकीन ॥२॥
निसान लिखे कयामत के, होसी जाहेर दाभा जिमी से ।
जब नूर झंडा हादी ले गए, बाकी रही हैवानी[३] जिमी में ॥३॥
ए निसान बातून अव्वल कहे, सो मिले सब आए ।
पर मुसाफ हकीकत जो खुले, तो आंखों देख्या जाए ॥४॥
सेर छाती पीठ गीदड़, मुरग गरदन हाथी कान ।
सिर सींग तीखे आंखें सुअर, ए कह्या मुंह आदमी बिना ईमान ॥५॥
सब अंग कहे हैवान के, और मुंह कहे इनसान ।
होसी गए आकीन ए तबीयतें, ए देखो खुलासे निसान ॥६॥
दाभतूल का निसान, ए देखो दिल धर ।
इनका तालिब[४] न देखे इने, माएने खुले बिगर ॥७॥

१. मक्का । २. कसम । ३. पशुता । ४. चाहनेवाला ।

जानवर तो ए है नहीं, लिखी हैवानी तबीयत ।
तो कह्या तालिब न देखसी, दुनी दाभा[१] आखिरत ।।८।।

दाभा गधा सों निसबत, अहेल जिमी दुनी जे ।
बिन आकीन बिन मुसाफ, कही जिमी जाहेर दाभा ए ।।९।।

हैवान अकल दाभा जिमी, होसी लोक जाहेर सिफली[२] के ।
सो दाभा ताबे दज्जाल के, देखो निसान खुलासे ॥१०॥

दुनी कही सिफलीय की, तिन जिमी न छोड़ी जाए ।
ज्यों जीव खारे का खारे जल, त्यों मीठे का मीठे समाए ॥११॥

बाएँ हाथ आसा[३] मूसे का, हाथ दाहिने मोहोर सलेमान ।
मोहोर करसी पेसानी[४] जिनकी, मुंह उज्जल तिन रोसन ॥१२॥

स्याह मुंह होसी तिन का, आसा चुभावे जिन ।
उज्जल स्याह मुंह अपने, केहेसी रात और दिन ॥१३॥

स्वाल किए इत जाहेरी, मोहोर आसा होसी दिल रूए[५] ।
बाहेर स्याह मुंह उज्जल, क्यों कर देखे कोए ॥१४॥

मोमिन कहे सुन मुस्लिम, भिस्त दोजख होसी सो भी दिल ।
आग भिस्त ना इस्म[६] तें, बाहेर मुंह छिपे स्याह उज्जल ॥१५॥

कह्या सूरत बाहेर बदले, जब दिल दई आग लगाए ।
सो बाहेर फैल करे कई विध, सके न कोई छिपाए ॥१६॥

अपने हाथ मुंह अपना, मोहोर करे क्यों कर ।
स्याह मुंह भी कहे हाथ इन, क्यों सब मुद्दा कह्या इन पर ॥१७॥

छिपी बातें थी दिलमें, ए देखो जाहेर करी पुकार ।
जोस दे न हादी का छिपने, या जीत या हार ॥१८॥

एही दाभा दुनी सिफली, सब केहेसी अपने मुख ।
जो जैसा तैसा तिनों, छिपे न आखिर दुख सुख ॥१९॥

१. पशुतुल्य मानव । २. नीच । ३. लाठी । ४. मस्तक । ५. मुंह । ६. नाम ।

जब एही बातून जाहेर हुआ, पेहेचान पोहोंची मांहें सब ।
सब एक हैयातीय का, करसी सिजदा तब ॥२०॥

॥प्रकरण॥८॥चौपाई॥५२१॥

दज्जाल का निसान

कह्या दज्जाल अस्वार गधे पर, काना आंख न एक ।
हक को न देखे आंख जाहेरी, रूह नजर न बातून नेक ॥१॥

अजाजील काना तो रानियां[1], जो बातून नजर करी रद ।
देख्या उपली आंखसों, आदम वजूद गलद[2] ॥२॥

गधा बड़ा दज्जाल का, कह्या ऊंचा लग आसमान ।
पानी सात दरियाव का, पोहोंच्या नहीं लग रांन[3] ॥३॥

गधा एता बड़ा तो है नहीं, कह्या हवा तारीक मकान ।
ए जो कुंन केहेते पैदा हुई, सिफली दुनी जहान ॥४॥

ना तो एता बड़ा गधा, होसी कैसा कद दज्जाल ।
सो दज्जाल गधा जब गिर पड़े, तले दुनी रहे किन हाल ॥५॥

लानत[4] जो अजाजील की, ले अबलीस बैठा दिल ।
सो राह न लेने देवे बातून, जो जोर करें सब मिल ॥६॥

सोई दाभा या गधा दज्जाल, अबलीस दिलों पातसाह ।
सो दुनी आंख फोड़ी दुस्मने, लेने देवे न बातून राह ॥७॥

ना तो लानत जो दज्जाल की, सो दुनी को लगे क्योंकर ।
सो वास्ते ताबे दज्जाल के, हुई बातून आंख बिगर ॥८॥

दुनी सिजदा न किया, रूह महंमद आदम पर ।
इन भी देख्या वजूद को, ना खोले बातून नजर ॥९॥

तो हुआ दिलों पर पातसाह, सोई राह चलावत ।
जिन राह चलते अबलीस को, दूर किया दे लानत ॥१०॥

१. त्यागा हुआ । २. मिथ्या (मिट्टी का) । ३. जांघ । ४. फिटकार ।

इन बिध लगी लानत, अजाजील की दुनी को ।
जैसी हुई सिरदार से, हुई तैसी ताबे[1] हुए सों ॥११॥

सिपारे उनईस में, कह्या निकाह[2] आदम हवा ।
सो पसरी बीच दुनी के, इत अबलीस जो पैदा ॥१२॥

जेता कोई बनी आदम, कह्या निकाह अबलीस से ।
कह्या दुनी बीच अबलीस, लोहू ज्यों तन में ॥१३॥

कह्या वजूद आदमी, सैतान अमल दिल पर ।
दुनी होसी इन बिध की, कहे बीच हदीस पैगंमर ॥१४॥

दोऊ तरफों कह्या पेटमें, और दुनी हाथ बीच दोए ।
इन बिध रहे बीच आदम, याको किन बिध मारे कोए ॥१५॥

कह्या पैदा आदम हवा से, याकी असल बिध इन ।
सो बाहेर ढूंढे माएना जाहेरी, बिना मगज सुकन ॥१६॥

और हदीस में यों कह्या, दुनी राह देखे जाहिर दज्जाल ।
माएना न पावें ढूंढ़ें जाहेर, कहे हम लड़सी तिन नाल ॥१७॥

सोई सूरत धुआं दज्जाल, दुनी तिन दई उरझाए ।
मुसाफ बरकत ईमान बिन, छूटी आखिर हक हिदायत ताए ॥१८॥

कयामत फल जिन सों गया, उलट बलाए[3] लगी आए ।
आग नजर आई दोजख, रही बदफैल[4] देहेसत[5] भराए ॥१९॥

धुआं करे मार दिवाना, कह्या ऐसे ही ईमान बिन ।
छूटी मुसाफ नसीहत बरकत, तब ऐसा क्यों न होए हाल तिन ॥२०॥

कहे अबलीस मैं घेरोंगा, राह मारों तरफ चार ।
वह जाने लई राह दीन की, इन बिध देऊं राह मार ॥२१॥

ढूंढ़े जाहेर निसान जाहेरी, सो तो कहे कयामत के दिन ।
जो कोई ताबे दज्जाल के, ताए रूह आंख नहीं बातन ॥२२॥

१. आधीन । २. विवाह । ३. संकट । ४. कुकर्म । ५. डर ।

सिपारे चौबीस में, बड़ी साहेबी दज्जाल ।
पोहोंचे दरियाव जंगलों, चले याके फिरके नेहेरें मिसाल ॥२३॥
जो लिख्या अव्वल ताले मिने, सोई दुनी से होए ।
और बात फुरमाए बिना, क्यों कर करे कोए ॥२४॥

॥प्रकरण॥९॥चौपाई॥५४५॥

सूरज मगरब का निसान

कह्या मगरब[१] ऊगसी सूरज, दुनियां के दिल पर ।
नाहीं रोसनी तिनमें, तब होसी बखत आखिर ॥१॥
सूरज ऊग्या मगरब दिलों, कह्या रोसन नाहीं तित ।
तो अक्स[२] सूरज की अंधेरी, सो गया ईमान रही जुलमत[३] ॥२॥
रोसन बिना सूरज कह्या, ऊग्या दिलों पर जे ।
सो आई पुकार मगरब से, देखो निसान जाहेर हुए ए ॥३॥
ए कह्या रसूलें इसारतों, ऐसा होसी बखत आखिर ।
मता ले जासी जबराईल, तब रेहेसी अंधेर दिलों पर ॥४॥
कह्या सूरज होसी मगरब का, तिनमें नहीं रोसन ।
होसी गुलबा[४] जोर दज्जालका, तब ईमान न रेहेसी किन ॥५॥
जाहेरी देखें सूरज जाहेर, अजूं मगरब ऊग्या नाहें ।
देखें न माएना अंदर, कह्या रोसन नहीं तिन मांहें ॥६॥
तब सूरज पना क्या रह्या, कही बिन रोसन अंधेर ।
सो गया ईमान रह्या कुफर, तिन लई जो दुनियां घेर ॥७॥

॥प्रकरण॥१०॥चौपाई॥५५२॥

आजूज माजूज का निसान

कहे आजूज[५] माजूज[६], जाहेर होसी आखिर ।
खाए जासी सब सय[७] को, ऐसा होसी बखत फजर ॥१॥

१. पश्चिम । २. छाया । ३. अंधकार, अज्ञान । ४. प्रभाव (उत्पात - फसाद) । ५. दिन । ६. रात ।
७. चीज ।

दिवाल कही अष्टधात की, चाटें आजूज माजूज दायम ।
पीछे रहे जैसी कागद, सुबा[१] देखे त्योंही कायम ।।२।।

आजूज माजूज जुफ्त[२], गिनती लाख चार ।
सब पी जासी दुनी पानी ज्यों, टूटे दिवाल न रहे लगार ।।३।।

तीन फौजां तिन होएसी, तूला[३] ताबा[४] साबा[५] की ।
दुनी जिमी सब खाए के, तीर आसमान चलावसी ।।४।।

बड़ा कह्या सब चीज से, और आजूज सौ गज का ।
चाटे दिवाल अष्टधात की, कहे सुबा तोडूं इन्साअल्ला ।।५।।

कह्या और भी बड़ा सब चीजोंसे, माजूज बड़ा गज एक ।
तंगचस्म[६] चाटे दिवाल को, पीछे फेर कागद जैसी देख ।।६।।

ए कही औलाद याफिस की, बेटा नूह नबी का जे ।
जो बाप कह्या तुरकस्थान का, देखो मिलाए कबीला ए ।।७।।

इन्साअल्लाताला[७] जो लों ना कहे, तो लों तोड़ न सके दिवाल ।
इन्साअल्लाताला केहेसी आखिर, तब टूटसी कागद मिसाल ।।८।।

आजूज माजूज जाहेर हुए, जो नाती[८] नूह पैगंमर ।
खात जात हैं दुनी को, क्यों देखें बातून बिगर ।।९।।

सो ए निसान क्यों देखिए, ऊपर जाहेरी नजर ।
जाए ना इलम हक का, सो देखें क्यों कर ॥१०॥

निसान सब जाहेर हुए, जो दुनी देखे सहूर कर ।
जो खोल देखे आंखे रूहकी, तो देखे हुई फजर ॥११॥

निसान सब जाहेर हुए, आई बड़ी दरगाह से पुकार ।
चाक चढ़ी सब दुनियां, पर क्यों देखे बिना विचार ॥१२॥

हुए हिजाब[९] आदम अकलें, हक गुझ पाइए हक इलम ।
ले माएने दुनी उपले, तासों जाहेर होत जुलम ॥१३॥

१. प्रभात । २. जोड़ा । ३. प्रभात । ४. दोपहर । ५. संध्या । ६. बंद आंख । ७. परमात्मा की इच्छा - हुकम से । ८. पोता । ९. परदा ।

एता दिल मजाजी न बूझहीं, जो नाती नूह नबी के ।
ए निजस हराम क्यों खाएसी, क्यों पावें माएना जाहेरी ए ॥१४॥

पढ़े करें माएना आजूज माजूज, जो नाती नूह नबी के ।
सो क्यों खाए नापाक दुनियां, पाक पैगंमर-जादे[1] ॥१५॥

पढ़े दुनी मुसाफ आखिरी, खोले माएना बीच मुस्लिम ।
कहे पाकों को कुफर, होए ऐसा जाहेरी माएनों जुलम ॥१६॥

होत जुलम मायनों जाहेरी, तो भी छोड़ें ना ए सनंध ।
क्या करें हक इलम बिना, कह्या देखीता ही अंध ॥१७॥

इनमें लिखी इसारतें, निसान पाइए नजर बातन ।
लिए ऊपर के माएने, क्यों पाइए कयामत दिन ॥१८॥

पढ़े कहें दिन कयामत, हकें रखे अपने हाथ ।
या तो हक आपै खोलहीं, या हादी खोलें जो हक साथ ॥१९॥

हक हाथ दिन तो कहे, जो हकें आप छिपाए ।
सो निसान पाए दिन पाइए, सो जाहेर दुनी क्यों देख्या जाए ॥२०॥

जो जाहेरी देखें जाहेर, माएने तो छिपे निसान ।
निसान देखोगे दिन कयामत, सो क्यों होए जाहेरियों पेहेचान ॥२१॥

जो कयामत देखावते जाहेर, तो निसान भी करते जाहेर ।
तो करते ना यों इसारतें, जो दुनी देखावते बाहेर ॥२२॥

बड़ा कह्या सब चीजों से, ले जिमी लग आसमान ।
दिन बीच दुनी की दौड़त, सौ तरफ खाहिस[2] जहान ॥२३॥

बड़ा कह्या इन माएनों, करी रोसन आकास जिमी ।
सौ गज कहे सौ तरफों के, दौड़े खाहिस दिन आदमी ॥२४॥

योंही कह्या बड़ा माजूज, हुई रात आकास जिमी ले ।
दुनी आंख मूंदे बीच रात में, भई दिस मानिंद[3] एक गज के ॥२५॥

१. पुत्र । २. चाहना । ३. तरह ।

जो सय आई दिन में, तिन सबों खाहिस सौ तरफ ।
सोई सबों एक तरफ रातकी, ए देखो माएने कर हरफ ॥२६॥

जो कह्या सौ गज का, सो सब से बड़ा क्यों होए ।
और भी कह्या सबसे बड़ा, तो क्यों एक गज कह्या सोए ॥२७॥

दिवाल कही दुनी उमर, ए टूटे रहे न कोए ।
खाएँगे एही सबन को, उमर चाट काटत हैं दोए ॥२८॥

जाहेरी कहें दिवाल, हद बांधी सिकंदर ।
सो तो जाहेर किन देखी नहीं, बिन माएने खुले अंदर ॥२९॥

ए रात दिन काल दुनी के, एही काटें दायम उमर ।
एही खासी सब सय[1] को, दिन पूरे कर फजर ॥३०॥

आजूज माजूज हुए जाहेर, केता किया दुनी पर मार ।
अजूं न देखे दुनी स्याह दिल, जो पड़ी आलम में एती पुकार ॥३१॥

औलाद कही याफिस की, जाके भाई स्याम हाम ।
ए तीनों से पैदा सब दुनी, ए लिख्या बीच अल्ला कलाम ॥३२॥

ए तीनों भाइयों की पेहेचान, दुनी को होसी हक इलमें ।
एक दीन होसी सबे, जब लई बूझ सबों दिलमें ॥३३॥

जो लों ले ऊपर के माएने, तो लों कबूं न बूझा जाए ।
सक छोड़ न होवे साफ दिल, जो पढ़े सौ साल ऊपर जुबांए ॥३४॥

इसारतें रमूजें अल्लाह की, सो लेकर हक इलम ।
सो खोले रूहअल्लाह की, जिन दिल पर लिख्या बिना कलम ॥३५॥

महामत कहे ए मोमिनों, खोल दिए चार निसान ।
और भी तीन केहेत हों, ले बातून देखो दिल आन ॥३६॥

॥प्रकरण॥११॥चौपाई॥५८८॥

१. वस्तु ।

बाब तीन निसान का-रूहअल्ला इमाम असराफील

चारों निसान ए कहे, और देखो कहे जो तीन ।
ईसा इमाम असराफील, जिन खड़ा किया झंडा दीन ।।१।।
निसान लिखे दिन कयामत, सो तो रखे हक हादी हाथ ।
या हादी खोलें हक इलमें, या खोलें सुंनत-जमात[1] ।।२।।
तो लिखाया जाहेर कर, इतथें उठ्या झंडा नूर ।
खड़ा किया बीच हिंद के, हुआ आसमान जिमी जहूर ।।३।।
निसान लिखे सो सब मिले, जो कयामत के फुरमाए ।
ताए नफा न देवे तोबा पीछली, जो अव्वल झंडे तले न आए ।।४।।
लिख्या फलाने सिपारे, दिन हुए तोबा[2] नफा नाहें ।
जो अव्वल आया नूर झंडे तले, सो आया गिरो नाजी मांहें ।।५।।
कुल्ल अकल हक इलमें, होए पैदा बका हक दिन ।
इन इलमें जहान जुलमती[3], करी हिदायत[4] रोसन ।।६।।
जब हक झंडा नूर महंमदी, बीच खड़ा हुआ हिंद के ।
तब अक्स नूर ईमान का, रह्या अंधेर कुफर पीछे ।।७।।
तो भी न विचारें दिल मजाजी, जो सखत लिख्या सौं खाए ।
हक हादी उठाया वह झंडा, जिनें रात के अमल चलाए ।।८।।
हक हादी बिना झंडा हकीकी, और किने न खड़ा किया जाए ।
सो इन बखत सदी आखिरी, जिन झंडे रात के दिए उठाए ।।९।।
वह झंडा जो जाहेरी, सो भी हक हादी बिना कौन उठाए ।
जिन जैसी नीयत, तिन तैसी दई पोहोंचाए ॥१०॥
लिखियां ए बुजरकियां, ए जो कहियां बीच आखिरत ।
सो कहें हाथ हमारे, दुनी फल पावसी कयामत ॥११॥

१. ब्रह्मसृष्टी । २. पछताना । ३. अज्ञान एवं अंधकार से भरी हुई । ४. उपदेश ।

कहें हम खासी उमत, और हमहीं वारस कुरान ।
कजा करत हैं हमहीं, हमहीं खावंद ईमान ॥१२॥

ए लिखे जाहेर माएने, सूरज ऊगसी दिलों पर ।
पहाड़ पूजें हम निसान, बैत बका देखावें फजर ॥१३॥

हम देखें राह निसान की, जो कहे बड़े कयामत ।
देखें पैदा बैत[1] अल्लाह से, जो हम सों करी सरत ॥१४॥

लिखे निसान कौल कयामत के, ले माएने बातन ।
सो माएने मगज पाए बिना, समझ न परी किन ॥१५॥

सात निसान बड़े कहे, जासों पाइए कयामत ।
सोए दुनी तब देखसी, ऊगे सूरज मारफत ॥१६॥

तो लों अंधेरी रात की, छूटे नहीं क्यों ए कर ।
देखें निसान बातून माएनों, तब पावें दिन आखिर ॥१७॥

जो लों लिया जाहेरियों, माएना ऊपर का ।
तब लग फना बीच में, हुए जिद कर तफरका[2] ॥१८॥

कौल तोड़ जुदे हुए, तो नारी कहे बहत्तर ।
लिख्या जलसी आगमें, और कहा कहे इन ऊपर ॥१९॥

हक अर्स बका तब पाइए, जो खुले हक हकीकत ।
दिन हुए सब देखिए, सूरज ऊगे मारफत ॥२०॥

सूरज ऊग्या मगरब दिलों, होसी जाहेर दाभा जिमी से ।
अजूं देखें नहीं दज्जाल को, जो जाहेर हुआ सबमें ॥२१॥

नूर झंडा महंमदी इमामें, किया खड़ा हकीकी दीन ।
क्यों दाखले मिले दिल मजाजी, दिल दुस्मन तोड़े आकीन ॥२२॥

सूर[3] बाजत असराफील, क्यों सुने दिल कान बिगर ।
ओतो ले ले माएने बातून, निसान धरे कौल पर ॥२३॥

१. घर । २. अलग-अलग । ३. अवाज ।

तो कह्या रसूलें हदीसमें, सूर देसी पहाड़ उड़ाए ।
सो पहाड़ जरे ज्यों खाली मिने, फिरे उड़ते ना ठेहेराए ॥२४॥

तो मुसाफ मगज असराफीलें, किए जाहेर कई विध गाए ।
तो एक सूरें दुनी फना करी, किए दूजे सूरें कायम उठाए ॥२५॥

ए पहाड़ जरे ज्यों क्यों हुए, क्यों देखे बिना दिल विचार ।
पहाड़ कहे कुफर खुदी के, सो हुए पाक जरे ज्यों निरवार ॥२६॥

पाक जो होवें इन बिध, जब उड़े गुमान कुफर ।
पाक हलके हुए बोझ डालके, तब आए बीच नूर नजर ॥२७॥

लिया दुनी पे ईमान, और दुनियां की बरकत ।
खैंच लिया कुरान को, और फकीरों की सफकत ॥२८॥

छीन लिया एता मता, तो भी न हुई खबर ।
क्यों देखे मजाजी दुनियां, जो लों बातून नहीं नजर ॥२९॥

बड़ी दरगाह से नामें वसीयत, पुकार करी केती आए ।
तो भी न विचारे दिल मजाजी, जो ऐसे लिखे सखत सौं खाए ॥३०॥

हिसाब कह्या होसी हिंदमें, पुरसिस[1] करसी हक ।
हक इलम ले रूहअल्ला, करसी सबों बेसक ॥३१॥

कई बुजरक कहावते रातमें, बैठे बैतअल्ला[2] ले ।
हक हम में बैठ करें हिसाब, जानें हमहीं सिर सब के ॥३२॥

कहे पहाड़ कुफर खुदी के, बिन हक इलमें जाहेर बढ़े ।
तब हकें मता छीन ले, पहाड़ किए हलके ॥३३॥

जब यों बुजरक हलके हुए, हिसाब दिए पाक होए ।
कुफर खुदी जब उड़ गई, तब गुसल[3] किया सब अंग धोए ॥३४॥

जिन जैसा चीन्हा महंमद को, तासों तैसी रखी चिन्हार ।
यों बदला पाए देखिए, या जीत या हार ॥३५॥

१. समझोता, पूछ-ताछ । २. खुदा का घर । ३. स्नान ।

हिसाब किया देखे नहीं, हादिएँ करी फजर ।
किए फैल पुकारे बुजरक, बिन ईमान न देखे नजर ॥३६॥

क्यों ए न आवे पढ़ों ईमान, करें न दिल सहूर ।
तो छीन ले भेजी वारसी, आप मोमिनों हाथ हक नूर ॥३७॥

लिख्या सिपारे दूसरे, कहे असराफ[१] मूसा एक हम ।
महंमद मेला और कर, देखें क्यों चलावे हुकम ॥३८॥

मिलावा महंमद का, ए जो मिले दरवेस[२] ।
देखें हम बिना काम महंमद का, क्यों कर जावे पेस[३] ॥३९॥

जो मुनाफक ताना मारते, कौल करते थे रद ।
मारे याही सिर्क[४] से, अब नूर झंडे महंमद ॥४०॥

रसूल ताना ए सुन के, फेर मेहेर कर बुलाए ।
वह तो भी टेढ़ाई न छोड़ें, रसूल मेहेर न छोड़ें ताए ॥४१॥

तब आयत भेजी हक ने, ल्याया जबराईल ।
सो देखो आयत में, हक केहेसी असराफील ॥४२॥

लिख्या सखत सौं खाए के, गया हमसों ईमान मुसाफ ।
सो हादिएँ देखाया झंडा अपना, करसी हिंद में हक इन्साफ ॥४३॥

सो भी लिख्या दिन कयामत, यों वारसी दई पोहोंचाए ।
सो देखो सिपारे बाईसमें, जो उमी रोसन किए आए ॥४४॥

खोज्या ना ढूंढ्या ना पढ़े, दिए मोमिनों हिस्से कर ।
जो एता झंडे किया रोसन, तो भी देखे न दुनी नजर ॥४५॥

ए सोई हुआ जो फुरमाया, आगूं भी फुरमाया होए ।
सो जरा न छूटे फुरमाए से, तुम देखोगे सब कोए ॥४६॥

कुरान ल्यावे आखिर, आवसी फुरमान बरदार[५] ।
अमल करे कहे माफक, वाको सक नहीं वार पार ॥४७॥

१. जानकार और श्रेष्ठ । २. पुनीत आत्मा, संत, फकीर । ३. चलायमान करना । ४. सुकन । ५. आज्ञाकारी ।

एता दिल मजाजी न बूझहीं, सोई खोले रमूजें किताब ।
ए बड़े काम कौन करसी, बिना आखिरी खिताब ॥४८॥

ए अव्वल से आखिर लग, दुनी मुई मरेगी जे ।
कर कजा इन मुसाफ सों, कौन उठावसी मुरदे ॥४९॥

जो लों न चीन्हें महंमद को, तो लों सुध ना जमाने ।
तब लग सुध न बका फना, ना सुध नफा नुकसाने ॥५०॥

सो पाइए बातून माएने, उपले आखिर नुकसान ।
हक इलमें दिन होवे सब सुध, बिन इलम रात हैवान ॥५१॥

ए माएने मुसाफ सोई करे, हकें भेज्या जिन ऊपर ।
कुंजी इलम आई जिनपे, सोई खोल दे खुसखबर ॥५२॥

रसूल आखिरी अल्लाह का, ल्याया आखिरी किताब ।
खोले रूहअल्ला आखिरी, दे मेंहेंदी को लिया सवाब[1] ॥५३॥

आई कुंजी इलम ईमाम पे, जिन सिर आखिरी खिताब ।
कजा महंमद जुबांए, सब पीवसी सरबत आब ॥५४॥

लिख्या सिपारे तीसरे, ले देखो हक अकल ।
सरा तोरा बनी असराईल का, हकें दई बनी इस्माईल ॥५५॥

फुरकान दई हारून को, सो देखो कौल आखिर ।
कोई कहे ए किस्से हो गए, सो कहे बेकौली[2] बेखबर ॥५६॥

किस्से कुरान तौरेत के, पढ़े डालत पीठ पीछल ।
कहे हो गए किस्से रातमें, यों इनों खोया फजर बका फल ॥५७॥

जेता मुसाफ माएना, सब नजूम[3] और बातन ।
सो खोले काम कयामत के, दिन होसी सबों रोसन ॥५८॥

लिख्या सिपारे आठमें, तो लों पढ़्या नहीं कुरान ।
मगज मुसाफ पाए बिना, सुध ना नफा नुकसान ॥५९॥

१. पुण्य । २. वचन तोड़ने वाला । ३. भविष्य ।

ए किन भेज्या कौन आइया, ल्याया फुरमान किन ऊपर ।
साल हजार नब्बे लग, ए पाई ना किन खबर ॥६०॥

जाहेर कह्या ईसा आखिर, आए करसी एक दीन ।
एही दज्जाल को मारसी, एही देसी सबों आकीन ॥६१॥

मुरदे एही उठावसी, करसी साबित नबुवत ।
और साबित कुरान माजजा[1], ए करसी ईसा हजरत ॥६२॥

अब देखो कुरान वारसी, लिख्या आखिर बोझ सिर इन ।
ए कौन करे मसी[2] बिना, रात उड़ाए के दिन ॥६३॥

फुरमान आया ईसे पर, ए देखो साहेदी हदीस ।
वह लेने न देवे माएने मगज, जिनों दिल दुस्मन अबलीस ॥६४॥

सो ईसा कह्या आखिरी, ए जो करत आखिर के काम ।
करनी माफक सब को, देसी फल मुसाफ तमाम ॥६५॥

ए कही ईसे की आखिर, अब कहूं इप्तदाए ।
तिन वाएदे रसूलें, फुरमान दिया पोहोंचाए ॥६६॥

कह्या हकें मासूक भेजोंगा, उतरते रूहों अर्स से ।
सिरदार तिनमें रूह अल्ला, हकें तासों कौल किया आपमें ॥६७॥

कहे रसूल रूहअल्ला वास्ते, ल्याया आखिरी फुरमान ।
रूह अल्ला इमाम आवसी, ले हक इलम पढ़सी कुरान ॥६८॥

मारसी सबों का सैतान, तब होसी एक दीन ।
सुभे सक भाने लदुन्नी, होसी सब दिलों पाक आकीन ॥६९॥

ए हक कौल कहे रसूलें, जो रूहों सों किए इप्तदाए ।
सो कुंजी दई दिल मसिएँ, क्यों औरों खोल्या जाए ॥७०॥

कुरान वारस मोमिन कहे, पढ़या या उमी[3] होए ।
बिन अर्स रूहें हक न्यामत, दूजा ले न सके कोए ॥७१॥

१. करामात । २. श्री देवचंद्रजी । ३. अनपढ़ ।

हक फुरमान मासूक ल्याइया, कुंजी रूहअल्ला साथ ।
सो इमाम खोलें बीच अर्स रूहों, जो एक तन सुनंत-जमात ॥७२॥

जब आवें यार ले महंमद, पट खोल दे मुसाफ दीदार ।
काजी कजा तब होएसी, दूजा कौन खोले ए द्वार ॥७३॥

कहे महंमद मैं अव्वल, रूहअल्ला आवसी आखिर ।
अहेलबेती[1] मेंहेंदी बीचमें, गिरो राखी पनाह कर ॥७४॥

मजाजियों में ले मुसाफ, क्या हक कजा करसी बीच रात ।
जब हक हादी आई उमत, तबही उड़ी जुलमात ॥७५॥

आया फुरमान रूहअल्ला पर, करसी एही कयामत के काम ।
मार दज्जाल एक दीन कर, देसी हैयाती तमाम ॥७६॥

अव्वल ल्याया एहिया, ईसे पर आकीन ।
कहें पढ़े सो हो गया, जिने दई जिंदगानी दीन ॥७७॥

एही गिरो पैगंमरों आखिरी, जिन लई महंमद बूंदें नूर ।
ए सोई उतरे अर्स से, जिन किए कौल हजूर ॥७८॥

कह्या आखिर पैगंमर आवसी, देसी साहेदी अपनी उमत ।
जो आए कौल कर हक से, तब जाहेर होसी कयामत ॥७९॥

निसान बड़ा ईसा आखिरी, और एही आखिरी किताब ।
महंमद मेंहेंदी आखिरी, इमाम आखिरी खिताब ॥८०॥

एही बड़े पहाड़ दो निसान, बका बतावें बैत-अल्ला ।
दे मुसाफ मगज साहेदियां, दिन देखावें नूरतजल्ला ॥८१॥

कह्या आवसी असराफील, आखिरी बड़ा निसान ।
जो फूंके जिमी पहाड़ उड़ावसी, दुजी फूंके कायम करे जहान ॥८२॥

असराफील चिन्हाए सों, मगज मुसाफी गाए ।
चौदे तबक एक सूर से, करके साफ उड़ाए ॥८३॥

१. परमधाम वाले ।

जब सूर बाजे दूसरा, देवे हक चिन्हाए ।
तिन सबों कायम किए, रही आठों भिस्त भराए ॥८४॥

आया असराफील आखिर, साथ आखिरी इमाम ।
माएने मगज मुसाफ के, किए जाहेर सब तमाम ॥८५॥

हकें ऐसा साथ इमाम के, दिया फरिस्ता मरद ।
उड़ावे जिमी पहाड़ जड़ मूल से, सो होसी फरिस्ता कैसे कद ॥८६॥

आठों भिस्त कायम करी, बजाए दूजा सूर ।
बरस्या आब सबन पर, अर्स अजीम का नूर ॥८७॥

हैयात किए सब इन ने, ए जो कहे बुजरक ।
और बका सब को किए, जिमी आसमान खलक ॥८८॥

आठों भिस्त कायम करी, कर रोसन जहूर ।
पेहेचानो ए फरिस्ता, ले हक इलम सहूर ॥८९॥

आसमान जिमी जड़ मूल से, एक फूंके देवे उड़ाए ।
कायम करे सब दूजी फूंकें, बका भिस्त में उठाए ॥९०॥

ए साथ महंमद मेंहेंदी के, फरिस्ता आया आखिर ।
क्यों न चीन्हो तुम इन को, जो करसी दिन फजर ॥९१॥

कह्या गाए असराफील मुसाफ, किए जाहेर मगज कुरान ।
या से पाक होए दुनी कयामतें, फल पाया सुभान ॥९२॥

ए पहाड़ निसान आखिरी, जिन देखाई बका बिसात ।
दुनी पहाड़ पूजे जाहेरी निसान, कर बैठे बका बीच रात ॥९३॥

मेयराज हुआ महंमद पर, सो लई सब हकीकत ।
हुए इलमें अर्स दिल औलियों, ऊगी बका हक सूरत ॥९४॥

अब देखसी सब नजरों, दोऊ झण्डों करी पुकार ।
बातून झण्डा नूर का, पोहोंच्या बिलंद नूर पार ॥९५॥

दुनी जाहेरी झण्डे की, तिन पांउं कटाए पुल-सरात[1] ।
लई ना हक हकीकत, और वजूदें चल्या न जात ॥९६॥
महामत कहे ए मोमिनों, हादिएँ खोले कयामत निसान ।
हक अर्स बका जाहेर हुए, फरिस्ते नूरै नूर किया जहान ॥९७॥

॥प्रकरण॥१२॥चौपाई॥६८५॥

झंडा हकीकी खड़ा हुआ हिंद में

जाए इलम पोहोंच्या हक का, ताए हुई हक हिदायत ।
सो आया फिरके नाजी मिने, झण्डा दीन हकीकी जित ॥१॥
लिखी कुरानमें हकीकत, होसी खोले एक दीन ।
जब ऊग्या सूर मारफत का, आवसी देख सबों आकीन ॥२॥
दीदार हुआ हक सूरत का, देख अर्स नजर बातन ।
न्यामत[2] अर्सों की सबे, लई अर्स दिल मोमिन ॥३॥
कहे आयतें हदीसें जाहेर, नूर झण्डा महंमदी जे ।
दिन दिन घड़ी घड़ी पल पल, नूर बढताई देखोगे ॥४॥
महंमद नूर है हक का, कुल सैयन महंमद नूर ।
इन झण्डे कौल महंमद के, आखिर किया चाहिए जहूर ॥५॥
लैलत कदर बीच मोमिनों, आए खोली रूह नजर ।
हक इलम ले रूहअल्ला, करी इमामें फजर ॥६॥
जब लिया माएना बातून, रूह नजर खुली तब ।
दिन मारफत हुआ आलम में, नूर रोसन किया अब ॥७॥
तब सबों ने देखिया, जो कछू हक बिसात[3] ।
हक खिलवत जाहेर हुई, अर्स बका हक जात ॥८॥
फुरमाया सब हो चुक्या, मिले सब निसान ।
हादी करसी जाहेर, खोल माएने मगज कुरान ॥९॥

१. कर्मकांड । २. पूंजी, सामर्थ्य । ३. सामग्री ।

झंडा नूर का महंमदी, ताए कबूं न होए नुकसान ।
जेते दिन जित फुरमाया, रह्या तेते दिन तित ईमान ॥१०॥

और ठौर हुकमें खड़ा किया, सो जाए लग्या नूर आसमान ।
जो एक ठौर कदी न देखिए, तो और ठौर बिलंद हुआ जान ॥११॥

लिख्या जाहेर हदीस में, नूर झण्डा निसान ।
सो हदीस देखे सेंती, करसी दिल पेहेचान ॥१२॥

अव्वल झण्डा कह्या सरीयत, जाके तले दुनी पाक होए ।
जो रहे तले फुरमाए के, ताकी सिफत करे सब कोए ॥१३॥

पर सरीयत झण्डा नासूत में, पोहोंच्या न लग मलकूत ।
पकड़े पुल-सरात ने, छोड़ ना सके नासूत ॥१४॥

जो लेवे राह तरीकत, ताके फैल हाल दिल से ।
सो पाक होए पोहोंचे मलकूत, फरिस्तों के अर्स में ॥१५॥

बीच चौदे तबकों, कहे सात आसमान ।
कोई सुरिया[१] उलंघ ना सक्या, देखो सोलमें सिपारे बयान ॥१६॥

आसमान जिमी बीच फना के, हवा लग ला-मकान[२] ।
ला लग पोहोंचे तरीकत, मुसाफ हकीकत बका बयान ॥१७॥

देखो सिपारे तीसरे, होवे हकीकत सों एक दीन ।
सो आन मिलाए सब हुकमें, आए तले मारफत झण्डे आकीन ॥१८॥

फुरमाया सरीयत तरीकत, किया रात बीच अमल ।
ना पोहोंचे बका दिन को, बिना हकीकत अर्स असल ॥१९॥

माएने हकीकत मुसाफ के, पावें हक के इलम ।
सो पोहोंचें जबरूत में, होए सुध हक हुकम ॥२०॥

गिरो फरिस्ते नजीकी, बका नूर मकान ।
उतरे मलायक[३] इत थें, सो पोहोंचसी कर पेहेचान ॥२१॥

१. ज्योति स्वरूप । २. शुन्य । ३. ईश्वरी सृष्ट ।

जब हक इलमें मारफत खुली, तब देख्या बका अर्स सूर ।
सो सूर[१] हुआ सिर सबन के, बरस्या बका हक नूर ॥२२॥

खासल खास अर्स अजीम, हक सूरत नूरजमाल ।
इत हादी रूहें खिलवत, ए वाहेदत जात कमाल ॥२३॥

इन विध झण्डा खड़ा किया, हादी मोमिनों इत आए ।
औलिए अंबिए पैगंमर, गोस कुतब मिले सब धाए ॥२४॥

आगूं जिन बंदगी करी, ए सोई जमाना बुजरक ।
सो देखो इत हक कदमों, कोई पीछा रहे न मांहें खलक ॥२५॥

अब दुनियां पीछी क्यों रहे, जब हुई हक कजाए ।
हुआ सब पर हुकम महंमदी, सो सब लेसी सिर चढ़ाए ॥२६॥

उठी कही जेती न्यामतें, सो आई बीच हिंदुस्तान ।
जो झण्डा महंमदी नूर का, नूर रोसन ईमान ॥२७॥

बेसक मेला इत होएसी, महंमद सरा अदल ।
तिन कायम करी दुनी फानी को, ले हक इलम अकल ॥२८॥

जो कह्या सरा दीन महंमदी, तामें सकसुभे कोई नाहें ।
सो सब सुध देवे हक बका, सकसुभे न अर्स दिल मांहें ॥२९॥

ना सक महंमद दीन में, ना सक महंमद सरीयत ।
ना सक सुंनत जमात में, कहें यों आयतें[२] हदीसें[३] सूरत[४] ॥३०॥

अब क्यों झण्डा छिपा रहे, हुआ जाहेर तजल्ला नूर ।
जाहेर किया नूर अर्स का, अर्स दिल महंमद जहूर ॥३१॥

खिलवत भी जाहेर करी, जो हक पातसाही वाहेदत ।
छिपी सब जाहेर हुई, जो हक दिल बीच न्यामत ॥३२॥

सिपारे चौथे मिने, कही गैब[५] हक खिलवत ।
सो जाहेर करसी मोमिन, उतर के आखिरत ॥३३॥

१. सूर्य (ज्ञान का) । २. चौपाई । ३. किताब । ४. प्रकरण । ५. छिपी ।

हुई ढील होते फजर, वास्ते आवने हक न्यामत[१] ।
सो आया अर्स बका मता[२], हुआ बीच बारहीं सदी बखत ॥३४॥

भई रोसनाई रूहअल्लाह की, सुरू दसई अग्यारहीं विस्तार ।
होते सदी बीच बारहीं, आया बका मता बेसुमार ॥३५॥

झण्डा महंमदी नूर का, सो पोहोंच्या नूर बिलंद ।
हुआ दिन दिल महंमद मारफत, उड़ी रात फरेबी फंद ॥३६॥

सिपारे उनईस में, लिखे एक ठौर बयान तीन ।
ए जो देखो दिल देय के, तो दिल नकस[३] होए आकीन ॥३७॥

आवे अर्स आकीन हक महंमद पर, जो देखो हकीकत मारफत ।
इलम लदुन्नी हक के, होए हक हिदायत ॥३८॥

इन विध झण्डा महंमदी, खड़ा हुआ बीच हिंदुस्तान ।
चौदे तबक जुलमत परे, नूर पोहोंच्या लाहूत आसमान ॥३९॥

महामत कहे मदीने से, लिखे खलीफों[४] पर फुरमान ।
उठी दुनी बरकत सफकत फकीरों, और कलाम अल्ला ईमान ॥४०॥

॥प्रकरण॥१३॥चौपाई॥७२५॥

झण्डा सरीयत का उठ्या

कह्या झण्डा उठ्या ईमान का, कौल किया जिन सरत ।
महंमद मेंहेंदी इमाम आए, लिखे आए नामें वसीयत[५] ॥१॥

यों हादी लिखे कर जाहेर, दिन देखाए देवें कयामत ।
सो लिखे सखत सौं[६] खाए के, सो भी वास्ते इन बखत ॥२॥

मेहेनत करी महंमद ने, और असहाबों यार ।
झण्डा खड़ा किया दीन का, तले आई दुनी बे सुमार ॥३॥

दुनियां जो जैसी हुती, सो तिसी विध लई समझाए ।
तोरा किया सिर सबन के, दई सरीयत राह चलाए ॥४॥

१. अखंड सम्पदा । २. खुदाई खजाना । ३. अंकित । ४. अधिकारी । ५. प्रमाणपत्र । ६. कसम ।

अग्यारै सदी लग अमल, चल्या सरीयत का ।
सो फरदा[1] रोज सदी बारहीं, कोल पोहोंच्या फजर का ।।५।।

सो नूर झण्डा बीच हिंद के, किया खड़ा नूर इसलाम ।
इत आई सब न्यामतें, और आया अल्ला कलाम ।।६।।

तो दरगाह से खादिम[2] बुजरकों, लिखे सखत सौं खाए ।
सो जमाना सदी अग्यारहीं, किने न देख्या दिल ल्याए ।।७।।

करी अव्वल लिख इसारतें, दूजे लिख्या केहेर देखाए ।
तीसरे उठाया झण्डा आकीन, चौथे हिंद में खड़ा किया आए ।।८।।

लिख्या अपने हाथों तेहेकीक, गई चारों हक न्यामत ।
सिर देखें राह गजब[3] की, क्यों न अजूं आवत ।।९।।

जाहेरी कहें अजूं न आइया, हक सेती गजब ।
आकीन बिना देखे नहीं, जो छीन लिया मता सब ॥१०॥

दुनी बरकत सफकत फकीरों, और लिया छीन कुरान ।
बाकी इसलाम में क्या रह्या, जो रह्या न काहू ईमान ॥११॥

अजूं राह देखे गजब की, जानें हुआ नहीं फुरमाया ।
इसलाम मता सब से गया, तो भी नजरों किनहूं न आया ॥१२॥

जुदे पड़े राह बीच रात के, जिद फितने खोया आकीन ।
तो दुनी बरकत सफकत फकीरों, हक कलाम लिए छीन ॥१३॥

ईमान बिना देखे नहीं, रही या गई न्यामत ।
नफा नुकसान तो देखहीं, जो होए इसलाम लज्जत ॥१४॥

सुध न पाइए बिना लज्जत, नफा या नुकसान ।
निसबत रहे ना जुबान की, जहां हक मारफत नहीं पेहेचान ॥१५॥

अजूं चाहे दुनियां माजजा, देखे ना खड़ा झण्डा नूर ।
तब उतथें अक्स पुकारिया, कहे हुए इसलाम से दूर ॥१६॥

१. कल आने वाला दिन । २. सेवक । ३. कयामत, प्रलय (आफत) ।

फजर हुए खुले हकीकत, खुलें हकीकत होए कयामत ।
हुए हक बका अर्स जाहेर, सूर उग्या दिन मारफत ॥१७॥

फुरमान जबराईल ल्याइया, बरारब से बीच हिंद ।
आए नूर झण्डा खड़ा किया, गया कुफर फरेबी फंद ॥१८॥

सरा चल्या हक हुकमें, किया कौल जिन सरत ।
सो आए पोहोंची सदी बारहीं, भई फरदा रोज कयामत ॥१९॥

यों झण्डा नूर बिलंद का, किया खड़ा हक हादी मोमिन ।
देखावे नामे वसीयत, नूर हिंद में बरस्या रोसन ॥२०॥

मुसाफ मता महंमदी मोमिनों, पोहोंच्या वारसी आखिरी इमाम ।
झण्डा पोहोंच्या अर्स अजीम लग, देखाए हक बका अर्स तमाम ॥२१॥

अर्स देखाया चढ़ उतर, हुआ मेयराज महंमद पर ।
क्यों दुनी देखे दिल मजाजी, बिन खोले रूह नजर ॥२२॥

जेता अर्स दिल मोमिन, बिन मेयराज न काढ़े बोल ।
बिन पूछे देवें सब को, अर्स अजीम पट खोल ॥२३॥

करने हैयात[1] सबन को, देवें हक इलम बेसक ।
सो पोहोंचे बका बीच भिस्त के, नूर नजर तले हक ॥२४॥

जो आया झण्डे तले महंमदी, सो तबहीं कायम[2] होत ।
देख्या सब हक दिल मता, हुई अर्स अजीम बीच जोत ॥२५॥

अपनी सूरत देखी अर्स की, जो रूहें तले हक कदम ।
जब सूर ऊग्या हक मारफत, तब सब आए तले हुकम ॥२६॥

महामत कहे ए मोमिनों, कही दो झण्डों की बिगत ।
अब खोल देऊं फरदा[3] रोज की, जो फुरमाई थी इसारत ॥२७॥

॥प्रकरण॥१४॥चौपाई॥७५२॥

१. अमरत्व को प्राप्त होना । २. अखंड । ३ आने वाले कल के दिन ।

बाब फरदा रोज का

फरदा रोज पेहेले कह्या, ए जो बखत कयामत ।
एक दिन एक रात की, फजर है आखिरत ।।१।।
साल हजार दुनीय के, गिनती चांद और सूर ।
सो हक के एक दिन में, आवे नूर बिलंद से नूर ।।२।।
इन किल्ली रूहअल्ला अर्स के, पट खोल करे रोसन ।
खोली हकीकत मारफत, किया अर्स बका हक दिन ।।३।।
दिन रब का दसमी सदी लग, दुनियां के साल हजार ।
मास हजार लैल के, तीसरे तकरार ।।४।।
कछू मास हजार से बेहेतर, ए जो कही लैलत कदर ।
ए फरदा रोज कयामत, ए जो कही फजर ।।५।।
दसमी सदी भी हिसाब में, गिनती में आई ।
इतथें सूरू हुई, रूहअल्ला की रोसनाई ।।६।।
हजार मास जो लैल के, हुए सदी अग्यारहीं भर ।
लिखी जो इसारतें, भई पूरी मिल बेहेतर[१] ।।७।।
और आई सदी बारहीं, इनमें फजर भई ।
लिख्या मुसाफ बीच आयतों, और हदीसों में कही ।।८।।
असराफील गावे फुरकान[२], जाहेर करे निसान ।
मगज मुसाफ[२] के बातून, कर देवे पेहेचान ।।९।।
खुलासा मुसाफ का, असराफील बतावे ।
तब सूरज मारफत का, हक अर्स दिल नजरों आवे ॥१०॥
तो हदीसें हक इलम की, भांत भांत करे बड़ाई ।
बाब[३] भिस्त जो हैयाती[४], सो याही कुंजी से खोल्या जाई ॥११॥

१. अधिक । २. कुरान । ३. प्रकरण, अध्याय । ४. कायमी ।

हक इलम जो लदुन्नी[1], बका अर्स असल ।
एही दानाई[2] हक की, कही जो कुल्ल अकल ॥१२॥
ठौर सबों के सब को, फरिस्ता बतावे ।
पाक असराफील इन विध, कुरान को गावे ॥१३॥
खासलखास रूहें उमत, गिरो फरिस्तों खास कहावे ।
गिरो रूहों गिरो फरिस्ते, दोऊ अपने ठौर पोहोंचावे ॥१४॥
एही सुंनत-जमात, महंमद बेसक दीन ।
सकसुभे ना इनमें, जित असराफील अमीन ॥१५॥
ए जो सुनंत-जमात, होए सके न जुदे खिन ।
ए गिरो फोड़ क्यों जुदे पड़े, जिनों असल अर्स में तन ॥१६॥
कई सरे अमल बीच रात के, चली जो सुभे सक ।
सो फजर हक इलमें, बेसक करी खलक ॥१७॥

छे दिन की पैदास

पैदास कही छे दिन की, सो इन आलम का विस्तार ।
दिन जुमां के बीच में, पाई साइत जो कही अपार ॥१८॥
आए एक साइत लैलत कदर में, उसी साइत में दूजी बेर ।
उसी साइत में तीसरे इन इंड, महंमद आए इत फेर ॥१९॥
एक दिन कह्या रब का, दुनी के साल हजार ।
इत थें आगे लैलत कदर, ए जो फजर तीसरा तकरार[3] ॥२०॥
एक कौल में कहे तीन दिन, सो भी बीच साइत इन ।
इन रोज रब कर ज्यारत[4], पोहोंचे अपने वतन ॥२१॥
और तीन दिन कहे रसूल लों, चौथे रूहअल्ला आए इत ।
रोज पांचमें इमामें जमा किए, सो पाई जुमां बीच साइत ॥२२॥

१. तारतम । २. हिकमत, चतुराई । ३. टुकड़ा, हिस्सा । ४. दरसन ।

छठे दिन मोमिन जमा हुए, तब गिरो आई सब कोए ।
सो साइत जुमां बीच खोल के, इस्कें पोहोंचे पाक होए ॥२३॥

कहे तीन रोज तीन तकरार के, चौथे फरदा[१] रोज फजर ।
दे दीन दुनी सबों सलामती[२], पाक हुए खोल रूह नजर ॥२४॥

छे दिन कहे और कौल में, कह्या तिन का बेवरा ए ।
हादी मोमिन कर सबों बका, अपने अर्स बका पोहोंचेंगे ॥२५॥

ए रोज कहे बंदगीय के, आए पोहोंचे सावचेत होए ।
ए दिन समझ रोजे रखे, कह्या तिन पर गुनाह न कोए ॥२६॥

एही भूल फना दुनी की, डाले बीच निजस अल्ला कलाम ।
तरफ न पावे जिनकी, कहे सो हम बका इसलाम ॥२७॥

दुनी यों खेलाई हक ने, क्या करे बिना अखत्यार ।
ए सब कछू हाथ कादर के, वही नचावनहार ॥२८॥

रात दिन फुरमाए हक ने, आप अपने हिसाब ।
सो डाले बीच निजस[३], ए जो रात का ख्वाब ॥२९॥

छे रोज कहे एक कौल में, और तीन रात कौल एक ।
ए हिसाब होए बीच फजर, हुए जाहेर साहेब नेक ॥३०॥

कहे एक कौल में दोए दिन, बीच कही जो रात ।
ए हिसाब दे सब फजर, सो कही कयामत बीच साइत ॥३१॥

ए दिन देखो हक के, जो कहे हैं बातन[४] ।
कह्या हक अर्स दिल मोमिनों, देखो कलाम अल्ला रोसन ॥३२॥

हकें काम लिया जो दिल में, सो जब हुआ पूरन ।
मकसूद[५] सबों हो रह्या, तब वाही फजर कह्या दिन ॥३३॥

जब थें आया रसूल हक का, तिन बीच हुए कई काम ।
जहां जो पूरन हुआ, दिन सोई कह्या अल्ला कलाम ॥३४॥

१. दूसरा दिन । २. रक्षित, कायम । ३. अपवित्र । ४. अंदर का । ५. इच्छा पूर्ति ।

जो बात निजस नाबूद, हक कलाम न कहे तिन में ।
जो हक दोस्त गिरो मासूक, कहे हक कलाम तिन से ॥३५॥

कह्या हदीस कुदसीय में, जब बन्दा करे फिकर ।
वह फिकर मुझ सों रखे, हकें फुरमाया यों कर ॥३६॥

कहे हदीस कुदसी, और आयतें हदीसें सूरत ।
इन का रोजा निमाज हक दोस्ती, एक जरा न बिना मारफत ॥३७॥

आंखें दई हकें इन को, और दिए कान अकल ।
ज्यों दुनियां मुद्दा वजूद पर, त्यों कहे मोमिन साहेब दिल ॥३८॥

जेते अंग हैं वजूद के, तेते अंग बातून दिल ।
नजर खुली जब रूह की, हुआ दिल मोमिन अर्स असल ॥३९॥

हाथ पांउं बाहेर अन्दर, सब अंगों हक नूर ।
कहे इन विध मोमिन अर्स में, जिन का हक आप करें जहूर ॥४०॥

महामत कहे ए मोमिनों, हादिएँ खोल दिए दिन बातन ।
कयामत दिन जाहेर कर, देखाया अर्स बका वतन ॥४१॥

॥प्रकरण॥१५॥चौपाई॥७९३॥

बाब हादी गिरो की पेहेचान

भाई महंमद के मोमिन, कोई था न उस बखत ।
तो सरा चल्या तोरे बल, कह्या हम फेर आवसी आखिरत ॥१॥

मोमिन का दुनी मजाजी[१], उठाए न सके भार ।
मारे उसी सिर्क[२] से, तो कहे बीच नार[३] ॥२॥

तब रसूल खोलत जो माएने, हकीकत मारफत ।
तो तबहीं होती फजर, जाहेर होती कयामत ॥३॥

आए सदी बीच आखिरी, जो रसूलें करी थी सरत ।
बखत हुआ बीच बारहीं, भई फरदा रोज कयामत ॥४॥

१. झूठे । २. शिर्क (एक परमात्मा के साथे किसी अन्य को बराबरी देना) । ३. नरक - दोजख ।

ए इसारतें हक मुसाफ की, पाइए खुले हकीकत मारफत ।
ए हक इलमें पाइए मेहेर से, जो होए मूल निसबत ।।५।।

ए अर्स गुझ बिना लदुन्नी, क्यों कर बूझ्या जाए ।
हक खिलवत बातें गैब की, दें अर्स दिल मोमिन बताए ।।६।।

वाहेदत भी इनको कहे, जो हादी हक जात ।
त्यों नूर हादी का उमत, इन बीच और न समात ।।७।।

सुंनत जमात इन को कही, गिरो एक तन जुदी न होए ।
ए हक इलमें बेसक हुए, याकी सरभर[१] करें नारी[२] सोए ।।८।।

वाहिद[३] तन मोमिन कहे, एही जमात-सुंनत ।
एही फिरका नाजी[४] कह्या, इनों हक हिदायत ।।९।।

ए जो कौल तोड़ बहत्तर हुए, कहें हम सुंनत-जमात ।
दिन मारफत हुए पछताएसी, सिर पटकें जिमी सों हाथ ॥१०॥

मेहेरबान ना देवे दुख किन को, मारे सबों तकसीर[५] ।
क्या राए राने पातसाह, क्या मीर पीर फकीर ॥११॥

सुंनत-जमात जात हक की, ए मुख से कहें हम सोए ।
कह्या गुनाह बड़ा इन कौल का, तो कह्या जलना याको होए ॥१२॥

कुंन केहेते जुलमत से, कहे पल में पैदा मोहोरे खेल ।
सो सरभर करें हक जात की, तो लटकाए गले में जेल[६] ॥१३॥

और गिरो महंमद मोमिनों, ए उन पर हुए मेहेरबान ।
तो दोस्त कहे दुस्मनों, ए मोमिनों बड़ी पेहेचान ॥१४॥

एही औलिया अंबिया, एही कहे हैयात ।
दूजा हैयात जरा नहीं, बिना वाहेदत हक जात ॥१५॥

कोई कायम जरा दूजा कहे, सो मुसरक[७] और काफर ।
एक जरा कोई कहूं नहीं, वाहेदत हक बिगर ॥१६॥

१. बराबरी । २. दोजखी । ३. एक । ४. ईमानदार । ५. गुनाह । ६. फंदा । ७. देवपूज्य ।

जो पातसाही हक की, नूरतजल्ला नूर ।
इन दोऊ अर्सों बका जिमी, सो सब वाहेदत नूर हजूर ॥१७॥

वाहेदत की रूहों वास्ते, खेल झूठा देखाया और ।
सो रूहें वाहेदत भूल के, जाने झूठाई हमारा ठौर ॥१८॥

एही कबीला एही घर, एही पूजें पानी आग पत्थर ।
जानें एही फना नासूत को, कछू नाहीं इन बिगर ॥१९॥

आसमान जिमी बीच फना के, ए सबमें सब्द पुकार ।
फेर याही को दूजा कहें, जो हक इलमें न खबरदार ॥२०॥

मोमिन और दुनी के, एही तफावत ।
मोमिन तन अर्समें, दुनी तन पेड़ गफलत ॥२१॥

मोमिन सुरत पीछी फिरे, उठ खड़ा होए अर्स तन ।
जो दुनियां दम पीछी फिरे, तो जाए ला-मकान बीच सुंन ॥२२॥

एक तन मोमिन अर्स में, दूजा तन सुपन ।
लैल फरामोसी बीच में, भूल गए अर्स तन ॥२३॥

दे हक इलम जगाए मोमिनों, देखी अर्स बका न्यामत ।
एक जरा छिपी ना रही, देखी अर्स हक खिलवत ॥२४॥

सकसुभे कछू ना रही, पट बका दिए सब खोल ।
दई साहेदी आयतों हदीसों, सो सब रूहअल्ला कहे बोल ॥२५॥

वजूद मोमिन जो ख्वाब के, सो किए रूबरू अंग असल ।
खोले बातून देखे रूह नजरों, किए दोऊ मुकाबिल ॥२६॥

सेहेरग से नजीक कहे इनको, जाकी असल हक कदम ।
जो हुआ असल पर हुकम, सोई नकल देत इत दम ॥२७॥

असल दुनी जिन गफलत, ताए इलमें करो पेहेचान ।
ताको नजीक सेहेरग से, सुन्य हवा ला-मकान ॥२८॥

नहीं करें बराबरी है की, क्यों मिले दाखला ताए ।
है नींद उड़े उठे अर्स में, फना नींद उड़े उड़ जाए ॥२९॥

सुपन उड़े जब मोमिनों, उठ बैठे अर्स वजूद ।
खासलखास बंदे नजीकी, ए कदमों हमेसा मौजूद ॥३०॥

ए रूहें फरिस्ते दो गिरो, जो बीच उतरी लैलत कदर ।
और दुनी फूंकें उड़ावे असराफील, दूजी फूंके उठावे बका कर ॥३१॥

महंमद कहे भाई मेरे, आवेंगे आखिरत ।
गिरो रबानी अहमदी, याकी बीच आयतों हदीसों सिफत ॥३२॥

खेल किया महंमद वास्ते, जैसे खेल के कबूतर ।
खासलखास गिरो रबानी, वह इनों की करे बराबर ॥३३॥

खेल किया महंमद वास्ते, महंमद आया वास्ते उमत ।
ताए एक दम न्यारी ना करें, मेहेर कर धरी तीन सूरत ॥३४॥

इन उमत भाइयों वास्ते, महंमद आए तीन बेर ।
दुनी क्या जाने बिना निसबत, बिना इलम रात अंधेर ॥३५॥

जब जोड़े मिले मुकाबिल, तब जाहेर हुए रात दिन ।
रात कुफर फना मिट गई, हुआ हक बका अर्स रोसन ॥३६॥

असल जाकी अर्स में, सो सेहेरग से नजीक होए ।
जो पैदा तारीकी[1] हवा से, क्यों हक नजीक आवे सोए ॥३७॥

सोई फना कही दुनियां, जाकी असल अर्स में नाहें ।
सोई हैयात हमेसगी, जो अर्स बका मांहें ॥३८॥

वे इंतजार उसी कौल के, ढूंढ़त फिरें रात दिन ।
आराम न होए बिना मिले, जेती रूह मोमिन ॥३९॥

महंमद मामिनों वास्ते, ले आया फुरमान ।
इलम किल्ली[2] ल्याए रूहअल्ला, किए छिपे जाहेर बयान ॥४०॥

१. मोहतत्व । २. चाबी (तारतम) ।

एते दिन किन ना कह्या, के रसूल आया इन पर ।
ना किन फुरमान सिर लिया, ना किन लई खबर ॥४१॥

नब्बे साल हजार पर, जब लग बीते दिन ।
एते दिन किन ना कह्या, जो कुरान न पकड़्या किन ॥४२॥

बोहोतों किया कुरान अपना, ना किन लई हकीकत ।
ना किन पाया इलम हक का, ना किन खोली मारफत ॥४३॥

जो रूहें उतरीं अर्स सें, तामें केते कहे पैगंमर ।
सिरदार सबों में रूहअल्ला, कहें हदीसें यों कर ॥४४॥

ए हुज्जत जाहेर किन ना करी, हम रूहें अर्स से आई उतर ।
कौल किया हकें हमसों, बोलावें बखत फजर ॥४५॥

कह्या रसूलें रूहअल्ला, मांहें सिरदार सब रूहन ।
मैं फुरमान ल्याया इनों पर, ए करसी साफ सबन ॥४६॥

मारें एही दज्जाल को, और एही करें एक दीन ।
साफ करे सब दिलों को, हक पर देवे आकीन ॥४७॥

एही खोले हकीकत मारफत, करे माएना जाहेर बातन ।
करे अर्स बका हक जाहेर, एही फजर कही हक दिन ॥४८॥

मेट दई रात अंधेरी, और अगले अमल सरे दीन ।
हक बका अर्स चिन्हाए, ऐसे हक इलमें किए अमीन ॥४९॥

हकें करी अर्समें रूहोंसों, पेहेलें रदबदल ।
सो इलमें जगाए दिल अर्स कर, हकें दई कुल्ल अकल ॥५०॥

जल बिन जल जीव ना रहे, ना थल बिन जीव थल ।
तो अर्स रूहें अर्स बिन क्यों रहें, जिनों हक बका अर्स असल ॥५१॥

ढूंढ़ें अपने रसूल को, और अपना फुरमान ।
और ढूंढ़ें हक इलम को, जासों बातून होए बयान ॥५२॥

राह देखें रूहअल्लाह की, और ढूंढ़ें आखिरी इमाम ।
हक हकीकत मारफत, चाहें फल कयामत तमाम ॥५३॥

फना बीच से निकस के, बीच आवें बका असल ।
दुनी दुख छोड़ लें हक सुख, ए रूहें क्यों छोड़े अपना फल ॥५४॥

दिल बका या फना दम, सब असल अपनी चाहे ।
कोई दोजख कोई भिस्त में, या कोई अर्स बीच उठाए ॥५५॥

ए जो फना मोहोरे खेल के, मैं मेरी कर खेलत ।
याही को देखें सुनें, सुध ना बका वाहेदत ॥५६॥

रूहें गिरो तिनमें मिल गई, हक बका न जानें तरफ ।
चौदे तबक फना बीच, कोई कहे न बका एक हरफ ॥५७॥

ना थे अव्वल ना होसी आखिर, ए जो बीच में देत देखाए ।
सो भी कहे किताबें अबहीं, आखिर देसी उड़ाए ॥५८॥

अव्वल आखिर नाबूद, बीच फरेब सो भी नाबूद[1] ।
सो बरकत महंमद मोमिनों, पाए कायम[2] भिस्त वजूद ॥५९॥

ओ उतरे कहे अर्स से, ए कुंन केहेते पैदास ।
जाहेर देखी तफावत, ए आम वे खासलखास ॥६०॥

असल तन इनों अर्स में, ठौर ठौर लिखी इसारत ।
बीच जंजीरों मुसाफ की, करें आयतें इनों सिफत ॥६१॥

तो जाहेर करी बीच लैल के, हक की गैब खिलवत ।
फजर होसी इत थें, दिन याही हक मारफत ॥६२॥

अव्वल फुरमाया रसूल को, कहो हरफ तीस हजार ।
राह रात की चलाओ सरीयत, बका फजरें रखो करार ॥६३॥

राह रात की चलाओ सरीयत, ले तरीकत पोहोंचे हकीकत ।
तब फजर दिल महंमदें, दिन होसी मारफत ॥६४॥

१. नश्वर । २. अखंड ।

सिपारे उनईस में, लिख्या रात हवा मजकूर ।
सूरज महंमद दिल मारफत, उड़े रात हवा देख नूर ॥६५॥

अग्यारैं सदी जाने आरिफ[१], लिखी हदीसों बीच सरत ।
इस राह पोहोंचावे हकीकत, होसी फजर दिन मारफत ॥६६॥

दुनी हजार साल हक दिन के, कही सौ साल एक रात ।
बारैं फरदा रोज फजर, होंए जाहेर हादी हक जात ॥६७॥

और पेहेले छिपे रखाए हक ने, ए जो हरफ तीस हजार ।
सो दिल बीच रखे महंमदें, कह्या तुमहीं पर अखत्यार ॥६८॥

तीस हजार और गुझ कहे, ताकी आई न किन को बोए ।
जबराईल से छिपाए, ए आखिर जाहेर किए सोए ॥६९॥

ए साहेदी नामें मेयराज में, बीच लिखे माएने बातन ।
हक इसारतें रमूजें, सो बूझे हादी या मोमिन ॥७०॥

हक इलम लदुन्नी जिन पे, सोई समझे हक रमूज ।
जो तन खिलवत अर्स के, सोई जानें हक दिल गुझ ॥७१॥

एही करें खिलवत जाहेर, दूर करें तारीकी रात ।
क्यों फना रहे बका नजरों, ऊग्या सूर बका हक जात ॥७२॥

अर्स न्यामत जाहेर हुई, जोए कौसर अर्स हौज ।
हक इलमें कछू ना छिपे, किया जाहेर फरदा रोज ॥७३॥

ए जो दुनी पैदा जुलमत, सो इनों की करे सरभर[२] ।
मजाजी[३] क्यों होए सके, रूहें हक बराबर ॥७४॥

ए जो मोमिन नूर बिलंद के, दिल जिनों अर्स हक ।
सरभर इनों की दुनी करे, हुआ सिर गुनाह बुजरक ॥७५॥

जब लिया बातून माएना, खोली रूह नजर ।
तब हुआ अर्स दिल मोमिनों, जाहेर हुई फजर ॥७६॥

१. ब्रह्मज्ञानी । २. बराबरी । ३. मूर्ति पूजक ।

ए जो अमल चलते थे रात के, ले राह सरीयत ।
सो हुए सब मनसूख[1], खोले हकीकत ॥७७॥

कह्या फजर को होएसी, फरदा रोज आखिरत ।
होसी खोले हकीकत, हक अर्स लज्जत ॥७८॥

सो आए जब इत दिन में, भया नूर रोसन ।
सिफायत महंमद की, फजर पोहोंची तिन ॥७९॥

तो कह्या अमल रात का, सुध आप ना हक ।
हुता न इलम लदुन्नी, जिनसे होइए बेसक ॥८०॥

हक इलम से होत हैं, अर्स बका दीदार ।
पट खोलत सब वार के, और नूर के पार ॥८१॥

सुध होए हक कुदरत, और आप चिन्हार ।
इलम लदुन्नी हक का, खोल देवे सब द्वार ॥८२॥

कायम न्यामत हक की, न थी रात के मांहें ।
अमल दुनी में सरीयत, ए चल्या है तब ताहें ॥८३॥

बुत[2] पुजावते रात के, गई जड़ मेख तिन ।
सो क्यों जाहेरी आगे चल सकें, हुए हक बका दिन रोसन ॥८४॥

झण्डा खड़ा था दीन का, मक्के मदीने ।
सो जमात ले सरीयतें, पकड़्या था अकीने ॥८५॥

हुकम किया था रसूल ने, जिन पड़ो जुदे तुम ।
सो कौल तोड़ बहत्तर हुए, रात के मुस्लिम ॥८६॥

इन मजाजी-जमात ने, छोड़े हक हादी कदम ।
सो टूक टूक जमात जुदी हुई, हाए हाए ऐसा किया जुलम ॥८७॥

हए हाए देख्या न हक हादी सामी, ना हदीसें कुरान ।
तो आए लिखे नामें वसीयत, इत ना रह्या किन का ईमान ॥८८॥

१. रद्द । २. मूर्ति, प्रतिमा ।

एक सात जने ईमानसों, मुए मुसलमान ।
आए पोहोंच्या सोई बखत, जो कह्या था नुकसान ॥८९॥

और लिख्या जो पीछे रहे, तिन दिलों नहीं आकीन ।
सो ए लिख्या सौं खाए के, अब लग था झण्डा दीन ॥९०॥

जो कह्या था रसूल ने, सोई हुआ बखत ।
आए लिखे नामें वसीयत, जाहेर करी कयामत ॥९१॥

तो आए नामें वसीयत, जो पेहेले फुरमाए ।
सो ए देखो बीच आयतों, दिलसों अर्थ लगाए ॥९२॥

ए जो मजाजी दुनियां, क्या करसी विचार ।
तो क्यों देखे बिना मारफत, बीच राह अंधार ॥९३॥

जिनों मुसाफ लदुन्नी खोलिया, पाई हकीकत ।
तब जानो फजर हुई, आए पोहोंची सरत ॥९४॥

तुम जुदे जिन पड़ो, रहियो गिरोह साथ ।
सो होएगा दोजखी, जो छोड़सी जमात ॥९५॥

सो तो जिद कर जुदे हुए, फिरके जो बहत्तर ।
ताको नारी आयतों हदीसों, लिख्या है यों कर ॥९६॥

सो देवाई हादिएँ साहेदी, पुकारे सिरदार ।
फैल कहे तिनों मुख अपने, दुनी सब हुई ख्वार ॥९७॥

कह्या दुनी पढ़सी, आप दिल विचार ।
चिट्ठी लेसी पीछली हाथ में, केहेसी फैल पुकार ॥९८॥

फिरका जो तेहेत्तरमां, कह्या नाजी हक इलम ।
मोमिन दिलों पर लदुन्नी, लिख्या बिना कलम ॥९९॥

तिन दिलों पर सूरज, ऊग्या मारफत ।
जिनों पाई अर्स इलमें, हक की हिदायत ॥१००॥

रूहें फरिस्ते अर्स के, सोई महंमद दीन ।
तिनमें सकसुभे नहीं, नूर पूर आकीन ॥१०१॥
ए जो बेसक महंमदी, सुंनत जमात ।
वाहिद तन कुल्ल मोमिन, छोड़े न हाथों हाथ ॥१०२॥
वसीयत नामें आए के, इत करी पुकार ।
राह बीच की छोड़ बहत्तर हुए, छूट गया करार ॥१०३॥
नाजी फिरका हक इलमें, बेसक हुआ एक ।
मारफत माएना मेयराज का, सब पाया विवेक ॥१०४॥
वसीयत नामें में सखत, लिखे सौगन्द खाए ।
सो कौन देखे नाजी बिना, दिल सों अर्थ लगाए ॥१०५॥
सो नूर झण्डा खड़ा कर, इत दिया देखाए ।
सो ईमान बिना देखे नहीं, पीछे रोसी पछताए ॥१०६॥
सो नूर झण्डा खड़ा हुआ, बीच हिंदुस्तान ।
जित जबराईल ले आइया, न्यामत चारों कुरान ॥१०७॥
जिमी आरब से ल्याइया, दुनियां की बरकत ।
और न्यामत बड़ी ल्याया, फकीरों की सफकत ॥१०८॥
ए जो दुनियां बरकत, सो तो कह्या ईमान ।
और फकीरो की सफकत, सो आखिर मेहेर मेहेरबान ॥१०९॥
उतथें उठाए जबराईल, ल्याया बीच हिंद ।
गिरो सितारे महंमदी, कहे जो सूरज चंद ॥११०॥
चांद सूरज दोऊ हादी कहे, महंमदी सूरत ।
कही गिरो सितारों की, खासलखास उमत ॥१११॥
सिपारे सत्ताइस में, जाहेर कह्या रोसन ।
सो तुम देखो अर्स दिलमें, जाहेर हक हादी मोमिन ॥११२॥

कह्या बीच हिंद के, हक करसी हिसाब ।
खासलखास उमत, सब लेसी सवाब ॥११३॥

अव्वल कह्या रसूलें, कजा होसी इत ।
दीदार तब तिन होएसी, खोलें हक मारफत ॥११४॥

सिपारे उनईस में, लिख्या सूरज मारफत ।
सो दिल रोसन महंमद का, होसी खोलें हकीकत ॥११५॥

ज्यादा हुआ फुरमाए से, जो कौल किया अव्वल ।
सो जोड़ देखो आयतों हदीसों, ले दिल अर्स अकल ॥११६॥

और भी देखो साहेदी, ए जो लिखी आयत ।
ए जो किस्से कुरान के, आयतें सूरत ॥११७॥

और सुकन बोलों नहीं, बिना हक फुरमाए ।
सोई देखेगा मोमिन, जो दिल अर्स केहेलाए ॥११८॥

महामत कहे ए मोमिनों, देखो अपनी निसबत ।
असल तन अर्समें, जो हक की गैब खिलवत ॥११९॥

॥प्रकरण॥१६॥चौपाई॥९१२॥

बाब असराफील का

तो असरफीलें आखिर, कुरान को गाया ।
ऐसा बड़ा काम तो किया, जो आखिर को आया ॥१॥

तो रसूल ने अव्वल, ऐसा फुरमाया ।
सो अपनी सरत पर, फरिस्ता आखिरी आया ॥२॥

लिख्या फलाने सिपारे, ऐसी खुस न कबूं आवाज ।
ए फरिस्ता कबूं न आइया, ए जो आया आज ॥३॥

जो कौल फुरमाया अव्वल, सो सब आए के किया ।
सूर बजाए दिल साफ से, सुकन सिर लिया ॥४॥

मगज जो मुसाफ का, जाहेर किया छिपाया ।
गाया खुस आवाज सों, कौल सिर चढ़ाया ।।५।।
लिख्या चारों पैगंमर, सरत अपनी आए ।
तिनों भी सिर हुकम, ल्याए हैं बजाए ।।६।।
पढ़ें किताबें अपनी, पैगंमर तीन ।
सो आए बीच आखिर, ए जो हकीकी दीन ।।७।।
आया असराफील आखिर, महंमद मेंहेंदी साथ ।
मुसाफ असराफील को, दिया अपने हाथ ।।८।।
हुआ सोई सरत पर, पैगंमरों मिलाप ।
सो पढ़े किताबें फुरमाए से, अपनी ले आप ।।९।।
एक तौरेत और अंजील, तीसरी जो जंबूर ।
सो ए किया सब जाहेर, छिपा था जो नूर ॥१०॥
एक मूसा और रूहअल्ला, तीसरा जो दाऊद ।
ए तीनों पैगंमर, आए बीच जहूद ॥११॥
ए किताबें जो आखिरी, आखिरी रसूल ल्याए ।
सो मगज मुसाफ जाहेर कर, असराफीलें गाए ॥१२॥
सो साहेदी सिपारे चौबीस में, लिखियां ठौर ठौर ।
हक हादी मोमिन बिना, जाने कौन और ॥१३॥
मेयराज किन पर ना हुआ, पैगंमर आखिरी बिन ।
और पैगंमर कई हुए, कई कहावें रोसन ॥१४॥
पर ए जो अर्स अजीम, रहें हमेसा मोमिन ।
ए रूहें नजीकी हक के, इनों अर्स बीच तन ॥१५॥
महंमद की हदीस में, खबर दई भाँत इन ।
कह्या सिरदार रूहअल्ला, बीच अर्स रूहन ॥१६॥

बीच बका लाहूत में, जो रूहें मोमिन ।
तीन सूरत महंमद की, सो कहे एक तन ॥१७॥
अव्वल सूरत एक बसरी, पीछे सूरत मलकी ।
कही तीसरी आखिर, सूरत जो हकी ॥१८॥
ए तीनों बातून में एक हैं, जो देखिए हकीकत ।
तब सबे सुध पाइए, होए बका मारफत ॥१९॥
ए सबे बीच अर्स के, कहावें वाहेदत ।
एक तन रूहें अर्स की, हक हादी सूरत ॥२०॥
और न कोई पोहोंचिया, बड़े अर्स में इत ।
आगे जाए जबराईल ना सक्या, कहे पर मेरे जलत ॥२१॥
और हुए कई फरिस्ते, और कई पैगंमर ।
जिन किनों पाई बुजरकी, ना जबराईल बिगर ॥२२॥
और सबे ताबे कहे, जबराईल के ।
जिंन देव या आदमी, या बुजरक फरिस्ते ॥२३॥
खास उमत महंमद की, जो कही अर्स रबानी ।
दूजी गिरो फरिस्तन की, जो कही नूर मकानी ॥२४॥
और बुजरक फरिस्ता आखिरी, कह्या जो असराफील ।
किए जाहेर मगज मुसाफ के, सकसुभे न आड़ी खील ॥२५॥
असराफीलें बीच अर्स के, सब हकीकत लई ।
सो ए मगज मुसाफ के, गाए के जाहेर कही ॥२६॥
ना तो जबराईल महंमद पर, कलाम अल्ला ले आया ।
पर माएना छिपा जो मगज, सो असराफीलें पाया ॥२७॥
देखो पैगंमर आखिरी, रसूल केहेलाया ।
सो असराफीलें गाए के, बातून सब बताया ॥२८॥

कह्या पैगंमर आखिरी, असराफील भी आखिर ।
ए जुदे क्यों होवहीं, देखो सहूर कर ॥२९॥

असराफील फिरवल्या, अर्स अजीम के मांहें ।
और जबराईल जबरूत की, हद छोड़ी नाहें ॥३०॥

एक नूर[१] और नूरतजल्ला[२], कहे ठौर दोए ।
ए नाही जुदे वाहेदत से, हैं बका बीच सोए ॥३१॥

एक जाहेर आम खास ज्यों, और अंदर खिलवत ।
ए सोई जानें हक अर्स की, जाए खुली मारफत ॥३२॥

जिनों खुले मगज मुसाफ के, माएने हकीकत ।
सकसुभे तिन को नहीं, जिनों हुई हक हिदायत ॥३३॥

सकसुभे क्योंए भाजे नहीं, हक इलम बिन ।
ना तो मिलो सब आदमी, या देव फरिस्ते जिंन ॥३४॥

असराफील के अमल में, सकसुभे नहीं कोए ।
कयामत फल पाया इतहीं, मगज मुसाफी सोए ॥३५॥

आखिर फल जो पावहीं, कहे सोई कुरान ।
दिन होवे तिन मारफत, हक अर्स पेहेचान ॥३६॥

तो कह्या असराफील, आवसी आखिर ।
सो फल लैलत कदर का, पाया तीसरे फजर ॥३७॥

लिखे सबों के मरातबे[३], ए जो बीच फुरकान[४] ।
सो ए जाने रूहें मोमिन, या जानें हादी सुभान ॥३८॥

ए जो गिरो फरिस्तन की, जाको नूर मकान ।
रूहें बीच नूरतजल्ला, सूरत रेहेमान ॥३९॥

जबराईल आइया, सबों पैगंमरों पर ।
सो ए रह्या बीच नूर के, ना चल्या महंमद बराबर ॥४०॥

१. अक्षरधाम । २. परमधाम । ३. दर्जा - पद । ४. कुरान ।

और कोई अर्स अजीममें, पोहोंच ना सकत ।
जित हक हादी रूहें, महंमद तीन सूरत ॥४१॥
और मोमिन बोल ना बोलहीं, एक मेयराज बिन ।
जिनपे इलम हक का, लदुन्नी रोसन ॥४२॥
सोई अर्स हक का, हादी रूहों वतन ।
इत हक हादी रूहों सूरत, अर्स के तन ॥४३॥
फरिस्ते अर्स सूरत नहीं, इनों जुदी असल ।
पैदास कही फरिस्तन की, पेड़ से नकल ॥४४॥
रूहें असल हक कदमों, है अर्स में सूरत ।
तो कहे हक हादी रूहें, अर्स की वाहेदत ॥४५॥
बीच अर्स अजीम के, सूरत बका हक ।
मोमिन हक इलम से, चीन्हें मुतलक ॥४६॥
मोमिन अर्स रूहों जैसा, कोई नहीं बुजरक ।
हक इलम यों केहेवहीं, इनमें नाहीं सक ॥४७॥
लिख्या अमेतसालून में, बड़ाई रूहन ।
देखो इत दिल देय के, निसां[1] करो मोमिन ॥४८॥
हक हादी वाहेदत बीचमें, कहे जो मोमिन ।
इलम कहे इनों सिफतें, और नाहीं सुकन ॥४९॥
सोई कहिए अर्स वाहेदत, जो हैं हक की जात ।
हक हादी रूहों बीच में, कोई और न समात ॥५०॥
पातसाही एक हक बिना, और नहीं कोई कित ।
दूजा हुकम कादर का, कई करत कुदरत ॥५१॥
सो करें जाहेर हक की, कई भांतो सिफत ।
फानी[2] छल झूठा नजरों, हुकमें देखत ॥५२॥

१. तृप्ति । २. नाशवान ।

महंमद रूहों को देखाए के, करसी सब फना ।
आंखां खोले ज्यों उड़ जाए, नींद का सुपना ॥५३॥

चौदे तबक की दुनियां, और जिमी अंबर ।
ऐसे खेल पैदा फना, होवें कई नूर नजर ॥५४॥

फरिस्ते देव जिंन आदमी, ए जो चौदे तबक ।
पैदा फना हो जात हैं, नूर के पलक ॥५५॥

कायम एक वाहेदत, हक की पातसाही ।
दूजी काहूं कितहूं, जरा कही न जाई ॥५६॥

देखाया रूहन को, देखो नौमें सिपारे ।
ए हक हादी रूहें निसबती, जो बन्दे अपने प्यारे ॥५७॥

हक बिना जो कछु कहे, सो होवे मुसरक[१] ।
और जरा नहीं कहूं कितहूं, यों कहे इलम हक ॥५८॥

हुकमें देत देखाई, कुदरत पसारा ।
ए देखत सब पैदा फना, हक न्यारे से न्यारा ॥५९॥

सिपारे ओगनतीस में, हकें लिख्या है जेह ।
सो देखो नीके कर, अपना दिल देय ॥६०॥

जब आई आयत हकीकत, तब पीछली करी मनसूक[२] ।
ए हुकम तोड़े सो क्यों देखे, जो फोड़ जमात हुए टूक टूक ॥६१॥

हादी देखाए भी तो देखे, जो दिल होए आकीन ।
सो सखत बखत ऐसा हुआ, जो छोड़ फिरे सब दीन ॥६२॥

न मानो सो देखियो, अगले अमल सरे दीन ।
मनसूख[२] लिख्या सबन को, जो गए छोड़ आकीन ॥६३॥

लिख्या सिपारे तीसरे, होसी खोलें हकीकत ।
एक दीन होसी सबे, कही इन सरत ॥६४॥

१. बेईमान (एक परमात्मा के अतिरिक्त अन्य की सत्ता मानने वाला) । २. रद्द ।

दुनी राह न पावे रात की, जाहेर फना नाबूद[१] ।
ऊग्या दिन मारफत का, सबों हुआ मकसूद ॥६५॥

दूर किए तारीकी रात के, सितारा करता था मैं मैं ।
डुबाया मारफत सूरजें, नाबूद डूब्या मैं मैं सें ॥६६॥

सो सितारा सरीयत का, करता था रात की रोसन ।
सो नाबूद हुआ देख सूरज, ऊगे मारफत दिन ॥६७॥

अर्स बका देखाए के, करसी सबों हैयात[२] ।
असराफील खोल मुसाफ[३], करसी सिफात[४] ॥६८॥

कलाम अल्ला का बातून, देखो हक इलम ले ।
महंमद सिफायत रूहों को, इनों करसी विध ए ॥६९॥

चारों किताबों के माएने, और माएने चारों वेद ।
लिख्या सबोंमें जुदा जुदा, कयामत एकै भेद ॥७०॥

किताबें दुनियाँ मिने, कहूं केती गिनती अनेक ।
तिन सबोंमें आखिरी, कलाम अल्ला विसेक ॥७१॥

तिन सबों किताबों बीचमें, बिध बिध लिखी कयामत ।
तिन सबों जिकर करी, आखिर बड़ी सिफत ॥७२॥

असराफीलें मुसाफ का, किया जाहेर खुलासा ।
तो हुआ ए नजीकी, खासों में खासा ॥७३॥

जिंन देव या आदमी, या जिमी आसमान फरिस्ते ।
तीन सूरत महंमद की, है हादी सिर सब के ॥७४॥

या जिमीन का तिनका[५], या बड़ा दरखत ।
कही सिर सबन के, महंमद हिदायत ॥७५॥

जमाना खाली नहीं, बिना महंमदी कोए ।
करत रोसन सबन में, चिराग नबी की सोए ॥७६॥

१. नश्वर । २. अखंड । ३. कुरान । ४. प्रशंसा । ५. बास का टुकड़ा ।

इन विध केहेवें हदीसें, और हक फुरमान ।
ले मगज माएने मोमिन, सब विध करें पेहेचान ॥७७॥

लिख्या आयतों सूरतों, और हदीसों मांहें ।
हादी इन महंमद बिना, और कोई किन सिर नाहें ॥७८॥

अव्वल कह्या महंमद, और बीच आखिर ।
खाली नहीं बिना खलीफे[1], महंमद के बिगर ॥७९॥

यों लिख्या बीच हदीस के, जो मैं काम करता हों अब ।
सो मैं आखिर आए के, तमाम करोंगा सब ॥८०॥

मैं आऊंगा यारों वास्ते, खोलों नजूम[2] मेरा मैं ।
मेरे कूच नजूमी कोई ना रह्या, मेरा नजूम खुले मुझ से ॥८१॥

मोमिन जिन जिन मुलकों, जुदी जुदी जुबां ले आए ।
ताही जुबां से तिन को, महंमद दें समझाए ॥८२॥

नूर महंमद कह्या हक का, दुनी सब महंमद नूर ।
जरा एक महंमद बिना, नहीं काहूं जहूर ॥८३॥

कही सूरत महंमद की, खावंद जमाने तीन ।
इन तीनों सिर खिताब, गिरो रबानी हकीकी दीन ॥८४॥

बसरी मलकी और हकी, ए तीनों एक सूरत ।
ए तीनों महंमद की, बीच अर्स वाहेदत ॥८५॥

और गिरो रूहें फरिस्तें, दोऊ कही रबानी ।
मांहें तीन सूरत महंमद की, जिन मुरग बूंदें लई पेहेचानी ॥८६॥

ए तीनों सूरत दोऊ गिरो मिने, कहे जो सिरदार ।
ए सब हक इलमें, कर देखो विचार ॥८७॥

ए दूजा खेल जो दुनियां, बीच जिमी आसमान ।
ए तो नाहीं कछुए, एक जरे भी समान ॥८८॥

१. धर्मगुरु । २. भविष्य ।

लिख्या चौथे सिपारे, ए चौदे तबक कहे जे ।
ए जरे जेता नहीं, दो टूक होवें जिनके ॥८९॥

रात अमल सरीयत का, चल्या लदुन्नी बिन ।
हक इलमें रात मेट के, किया जाहेर बका दिन ॥९०॥

कह्या दिल महंमद का, सूरज मारफत ।
हकीकत खोले पीछे, होसी हक लज्जत ॥९१॥

एही लदुन्नी[1] हक इलम, करसी फजर ।
देखसी मोमिन अर्स को, रूह की खोल नजर ॥९२॥

ए सिपारे उनईस में, लिखी हकीकत ।
सो आए देखो नीके कर, जो कह्या दिन मारफत ॥९३॥

दरम्यान जो साया[2] कही, आगे ऊग्या दिन ।
सूरज दिल महंमद का, हुआ नूर रोसन ॥९४॥

ए जो चल्या बीच रात के, अमल सरीयत ।
सो कहे दिल मजाजी, जो पैदा जुलमत ॥९५॥

अर्स दिल मोमिन कहे, सो दिल हकीकी जेता ।
रूहें फरिस्ते अर्स से, इजने[3] उतरे तेता ॥९६॥

रूहें गिरो दरगाह बीच, अर्स अजीम जेताई ।
एही अर्स दिल हकीकी, महंमद के भाई ॥९७॥

एही बीच वाहेदत के, खिलवत खुदाई ।
जो हक हादी रूहन की, नूर बका पातसाई ॥९८॥

अव्वल हादी रूहन सों, कौल हैं हक के ।
सो ए लिखी रदबदलें, कहें आयतें हदीसें ए ॥९९॥

रूहें हमेसा रेहेत हैं, अर्स बका दरगाह मिने ।
ए रदबदल हकसों, करी उतरते तिने ॥१००॥

१. तारतम । २. परछाई । ३. हुकम ।

अर्स अजीम नूर बिलंद से, रूहें उतरीं जब ।
ए माएने आयत हदीस में, लिख भेज्या है तब ॥१०१॥

हक हादी रूहनसों, जो हुई मुकाबिल ।
सो सुकन सब कुरान में, लिखी रदबदल ॥१०२॥

हकें लिख भेजी साथ हादी के, रूहों ऊपर इसारत ।
और कोई समझे नहीं, बिना हक वाहेदत ॥१०३॥

ए समझे कहिए तिन को, जो कोई दूसरा होए ।
ए बारीक बातें वाहेदत की, केहेते बंधाए सोए ॥१०४॥

ए सुकन बिना समझे, केहेते होए मुसरक ।
ए बारीक बातें खिलवत की, अर्स की गुझ हक ॥१०५॥

ए बातून माएने हक के, जानें हादी मोमिन ।
होए ना और किन को, बिना अर्स के तन ॥१०६॥

दूजा तो कहूं जरा नहीं, कहिए किन की बिध बात ।
कहें वेद कतेब और हदीसें, कछू नाहीं बिना हक जात ॥१०७॥

ए जो खुदी बीच दुनी के, मैं तैं करत ।
ए वेद कतेबों देखिया, जरा न काहूं कित ॥१०८॥

लिख्या वेद कतेब में, ए चौदे तबक कहे जे ।
बंझापूत सींग खरगोस, बोहोत भाँतों कह्या ए ॥१०९॥

बसरी मलकी और हकी, ए कही सूरत तीन ।
इनों किया हक इलम से, महंमद बेसक दीन ॥११०॥

और भी करी बेसक, ए जो कही सुंनत जमात[1] ।
इनों लई सब दिलमें, बेसक अर्स बिसात ॥१११॥

तब हुआ रूहन का, हक अर्स कलूब ।
याही हक अर्समें, रूह नजरों मिले मेहेबूब ॥११२॥

१. इंद्रियों को वश में रखने वाला समुदाय (ब्रह्मात्माएँ) ।

तब सुंनत जमात की, बातें सबे बनि आई ।
महंमद की तीन सूरतें, करी पूरी पनाही[1] ॥११३॥

अव्वल रोसन रसूल, रूहअल्ला आखिर ।
गिरो पाक करी बीच इमामें, दुनी सचराचर ॥११४॥

तीन सूरत महंमद की, मिल फुरमाया किया ।
भिस्त खोल दुनी फानी को, कायम सुख दिया ॥११५॥

चौदे तबक के बीच में, तरफ न पाई किन ।
हादी गिरो अर्स बीच में, बैठाए इलमें कर रोसन ॥११६॥

सेहेरग से नजीक हक अर्स, बीच हक इलम देवे बैठाए ।
ऐसा इलम लदुन्नी, रूहअल्ला ले आए ॥११७॥

रूहअल्ला आप उतर, इलम ल्याए हक ।
तिन समझाई सब उमतें, हक कौल बेसक ॥११८॥

तीन सूरत महंमद की, मिल करी ऐसी सिफात ।
उमतें पोहोंचाई दोऊ वतनों, दुनी सब करी हैयात ॥११९॥

अव्वल भी महंमद कह्या, बीच और आखिर ।
वेद कतेब सबों कौलों, केहेवत योही कर ॥१२०॥

हक कहे मुख अपने, महंमद मेरा मासूक ।
ए हक गुझ मोमिन जानहीं, जो दिल आसिक हैं टूक टूक ॥१२१॥

महामत कहे ए मोमिनों, रूहें आसिक इस्क वतन ।
बहस करी रूहों इस्क की, आसिक इस्क के तन ॥१२२॥

॥प्रकरण॥१७॥चौपाई॥१०३४॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का संपूर्ण संकलन
प्रकरण ५०१, चौपाई १८०१०

१. संरक्षण देना ।

।।मसौदा लिख्या है।।

जो हक हुकम से भाई केसवदास ने रिवाइत करी है । जो हादी ने जुबान मुबारक सेंती 'चौपाई' एक हजार चौंतीस (१०३४) फुरमाई थी, सो यार मोमिनों ने इसके बाब चौदे (१४) माफक अकल अपनी के गम दिल से बांध कर किताब तमाम करी । अब भाई मोमिन इन चौपाईयों के हरफ हरफ के माएने मगज जाहेर के और बातून के, रूह की नजर खोल के लेंगे दिल अर्स में और हक के बेसक इलम लदुन्नी सों विचारेंगे और फैल में ल्यावेंगे, तबहीं हाल ले हादी के कदमों कदम धरेंगे । किस वास्ते के आखिर के मोमिन आकल हैं, और हिदायत हक की लई है । सब बिधों कामिल हैं, जिनके दिल अर्स में सूरत खुदाए की ऊगी है और ए कलाम भी हादी ने मोमिनों को कहे हैं । तो हुकम से मोमिनों को जरूर सिर लेना है । तिस वास्ते जो कोई अरवा अर्स अजीम की होए और इलम लदुन्नी सों जाग्रत हुई होए । और हुकम मदत करे और हक हादी हिंमत देवें, तो सुरत हक हादी के कदमों बांध के । इस फानी वजूद को उड़ावे और बीच अर्स अजीम के उठ खड़ी होए और मिलाप हमेसगी का सुख लेवें । हादी ने दरवाजा बका का खोल्या है । केतेक यारों को लेय के आप अर्स सिधारे और अपने जो तन हैं, तिन को बुलावते हैं । ताकी साख ए चौपाई कयामतनामें की -

सुनत बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिंड ।
धिक धिक पड़ो तिन अकलें, वह नाहीं वतनी अखंड ।।

और आज हमारे हादी को बीच परदे के हुए दो महीने और दस रोज हुए । सो आज हमारे मेहेबूब की साल गिरह का दिन है । याने जन्म उच्छव छेहत्तरमा तमाम हुआ । पचहत्तर बरस और नव महीने और बीस रोज । इस फानी के बीच हम गिरो

रबानी के वास्ते । कई कसाले सेहे सेहे गुजरान किया और कई न्यामतें बका की । इन रूहों के वास्ते जाहेर करी । सो कहां लों लिखों बानी में जाहेर लिख्या है, जो देखेगा तिनकी निसां होएगी । सदी महंमद सलिल्लाह अलेह वसल्लम की अग्यारे सै और छे (११०६) महीना मुहर्रम, तारीख सत्ताईसमी (२७) पोहोर दिन चढ़ते और हिंदवी तारीख संवत सत्रह सै इक्यावना बरस (१७५१) भादरवा वद चौदस (१४) वार गुरौ, पहर दिन चढ़ते किताब मारफत सागर तमाम हुई । हुकम हक हादी के सें-चौपाई एक हजार चौतींस (१०३४) मुकाम परना में । लिखतंग गिरो रबानी की पांउं खाक हमेसा चाहत केसवदास की परनाम कोटान कोट डंडवत साथ सबको अविधारजो जी प्रीत की रीत सों झाझा सनेह प्यार से ।

।। मारफत सागर सम्पूर्ण ।।